व्यंग्य-संग्रह

करिया कक्काक कोरामिन



शरदिन्दु चौधरी

करिया कक्काक कोरामिन

(व्यंग्य-संग्रह)

शरदिन्दु चौधरी



शेखर प्रकाशन

पटना-24

Kariyaa kakkaak Koraamin
Satire by
Shardindu Chaudhary

प्रकाशक/मुद्रक : शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना–800024
मो.–09334102305
Email : choudharyshardindu11@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 60/– टाका

शब्द संयोजन/आवरण : राजाशेखर

स्वस्ति वाक्

भारतीय काव्यशास्त्रमे रसक एक भेद स्वरूप हास्य तँ अपन स्थान पहिनहिसँ स्थापित कयने अछि । व्यंग्य एवं वक्रोक्ति पहिने अलंकार रुपमे प्रयुक्त होइत छल । किन्तु, स्वतंत्र विधाक रुपमे व्यंग्यक उन्मेष आधुनिक कालेमे भेल अछि । ओना रसरुपमे व्यंग्यक अस्तित्व हास्यक अन्तर्गते छल । आब ई हास्यसँ बहराए अपन स्वतंत्र अस्तित्व बना लेने अछि । बौद्धिकता ओ सामाजिक तानाबानाक जटिलता तथा असंगति–विसंगतिक अभिवृद्धिक बीच व्यंग्यक महत्व दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि । एकर कारण ई अछि जे व्यंग्य वास्तवमे असंगति–विसंगतिकेँ, विद्रूप–विडम्बना आदिकेँ उजागर करैत ओहि पर चोट सेहो मारैत अछि । ई चोट मुस्कान सेहो प्रदान करैए आ विचलित सेहो करैए । जेँकि एकर सम्बन्ध सम्पूर्ण सामाजिक यथार्थसँ अधिक होइछ तेँ एकर प्रयोग–प्रचलन साहित्यक आनो विधा सभमे खूब बढ़ल । आइ ई व्यंग्य साहित्यक महत्वपूर्ण विधा बनि गेल अछि ।

भारतमे स्वाधीनता परवर्त्ती समाजमे विसंगति ग्रस्तता निरंतर बढ़ल अछि । कथनी–करनी, आचरण–मूल्य, रूढ़िक अनुपालन–विरोध, आदर्श–यथार्थक संघर्ष व्यंग्यात्मकताक आधार बनल । जटिल अन्तर्विरोधक उद्घाटन व्यंग्यक संबल बनल ।

कोनो भाषा साहित्यक क्षेत्रमे व्यंग्य रचनाकारक संख्या अन्य विधासँ अपेक्षाकृत बहुत कम होइछ । किएक तँ व्यंग्यलेखन सहज नहि होइछ । किछुए साहित्यकार एहि विधाक चयन करैत छथि तथा सफलता पबैत छथि । एहि हेतु वैचारिक तीक्ष्णताक संग स्थिति–परिस्थितिक अन्तः तन्तु सभक सम्यक् ज्ञान तथा एकरा अभिव्यक्त करबाक हेतु उपयुक्त भाषा पर पकड़ आवश्यक होइछ ।

व्यंग्यकार सामान्यतः स्वतंत्र व्यंग्य रचनाक हेतु एक चरित्र वा व्यक्ति ठाढ़ करैत अछि जकरा माध्यमे अपन विचार, तर्क, संकेत, संदेश आदि

अभिव्यक्त करैत अछि । मैथिलीमे हरिमोहन झाक 'खट्टर कका' सभक समक्ष छथि । तहिना एहि संग्रहमे शरदिन्दुजी हुनकहि सँ प्रेरणा लैत 'करिया कक्का' केँ ठाढ़ कयलनि अछि जे कोरामिनक प्रयोग सँ जीवन्तता बनौने रहैत छथि ।

छोट-छोट बुटीक रूपमे रचित-चर्चित ई प्रस्तुति संख्यात्मकता, गुणात्मकता, भाषिक प्रांजलता एवं प्रस्तुति शैलीक विशिष्टतासँ सम्पृक्त अछि । सद्यः वर्तमान कालक मैथिलीक मुख्य व्यंग्यकार आयुष्मान शरदिन्दु (कुमार) चौधरीक नवीनतम "करिया कक्काक कोरामिन" नामक व्यंग्य संग्रहक ई नवीनतम पोथी मैथिली साहित्यक व्यंग्य विधाक भंडारकेँ परिपुष्ट करैत मिथिला समाजक भावनात्मक एवं व्यवहारात्मक प्रगतिक पथ प्रशस्त करबामे अवश्य सहायक भए सकत । मैथिली साहित्य जगतमे नवतूरक रचनाकारकेँ प्रेरणा-प्रदायक बनि आम जनकेँ आह्लाद प्रदान करत से विश्वास कएल जा सकैत अछि । मिथिला-समाजकेँ जाग्रत बनबैत रहथि तकर साशीष शुभकामना ।

5 सितम्बर, 2016 -प्रो. (डॉ.) वासुकीनाथ झा

तुरंत खबरि देब !

परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा, राजनीतिमे 'कोर ग्रुप', पढ़ौनीमे 'गेस', नोकरी आ कमाइमे 'सेटिंग-गेटिंग', समाजसेवामे 'धन', भोजनमे 'फास्ट फूड' आ वेशभूषामे स्लीवलेश एवं 'बुचकट'क महत्ताकेँ देखैत लेखनमे सेहो हाइकू-लप्रेक आदि अपन साम्राज्य-विस्तार लेल अपस्याँत अछि ।

मोन पड़ैत अछि सुमनजी-मधुपजी ओ अमरजीक जवानीक ओ जमाना जाहिमे ओ लोकनि दसपतिया-बीसपतिया पोथीक बलेँ धुधुआइत वटवृक्ष बनि कतेकोकेँ शीतलता प्रदान कयलथिन, आगाँ बढ़बाक हेतु प्रेरित-प्रोत्साहित कयलथिन । फेर आयल पोथी-पोथाक जमाना जाहिमे 'भूत', 'वर्तमान', आ 'भविष्य'क राग अलापल गेल । फेर लोक वृहदाकार लेखनसँ पड़ायल मुदा इतिहास-पुरुष बनबाक लौल लगले रहलै । लेखन चलैत रहल । लेखक बदलैत गेलाह, मैथिली अपन चालि नहि बदललनि । जेहन मोन भेलनि रूप धरैत रहलीह । कहियो सोतिपुरामे विराजलीह तँ कहियो ब्राह्मणटोलीमे आ आब दलितबस्तीमे सेहो मुस्काइत छथि ।

करिया कक्का सभ देखैत रहलाह । गोर छलाह नहि तेँ कोनो रंगसँ रंगा जयबाक भय नहि भेलनि । जे फुरेलनि सैह कयलनि मुदा ई ध्यान अवश्य रखलनि जे मैथिलीक अहित नहि होइक, मिथिलाक मान नहि घटय, परिवारक खिधांश नहि होअय, अश्लीलताक आरोप नहि लागय, अपरोजक नहि कहाइ, अपसंस्कृतिक वाहक नहि कहल जाइ, भ्रष्टाचारक गंगोत्री लग नहि देखल जाइ आ ने लेखनमे तेना भासि जाइ जे अगिला पीढ़ी देखिते नाक-भौंह सिकोड़ि लिअय ।

'बुचकट' रूपमे लिखल रचनाक एहि पोथीमे जँ करिया कक्का एहि सभसँ इतरि भेटथि तँ तुरंत खबरि देब, कोनो गति बाँकी नहि रखबनि । एखन बस एतबे -

23 सितंबर, 2016

-शरदिन्दु चौधरी

विषय-सूची

आरक्षण-संरक्षणक माँग	— 7
परिचयक नव फार्मूला	— 10
बुद्धिक बखारीक वर्गीकरण	— 12
बुरबकहा खेत अगिला साल	— 14
'लीव इन रिलेशन'सँ जनमल सुन्नर नेना	— 16
'सरकार'क लिंग परीक्षण	— 18
व्यंग्य लिखबाक व्योंत	— 20
राजनीति नाम केवलम्	— 22
जेहन दीक्षा तेहने छिच्छा	— 24
कोरामे नेना, नगरमे सोर	— 26
बदलैत समाजशास्त्रक झाँकी	— 28
पुरस्कार विज्ञानक फलाफल	— 30
ठीकापर इमान	— 32
चुट्टी-पिपड़ीक मोल !	— 34
अन-धन लक्ष्मी घर आउ	— 36
उत्सवक उजाहि	— 38
जनसाधारणक बोर	— 40
झरकल मुँह झपनहि नीक	— 42
मिलन-मिलानक सेन्हमारी	— 44
पानि पिअयबाक परम्परा	— 46
मुक्तिक मार्ग	— 49
करिया कक्काक साक्षात्कार	— 51
करिया कक्काक कोरामिन	— 53

आरक्षण-संरक्षणक माँग

परशुरामक बाना बनौने एकटा लाल एकरंगाक झंडा हाथमे नेने करिया कक्का चौकपर धरनापर बैसल रहथि । एकटा तख्ती बगलमे लटकल छलैक जाहिपर लीखल छल 'आरक्षण ओ संरक्षण' ।

गामक लोक हुनक एहि नव रूप-ढ़ंग के देखि विस्मित छल । दुपहर होइत-होइत हुनक एहि कृत्यक चर्च सौंसे परोपट्टामे पसरि गेल । धीरे-धीरे चौकपर लोकक बेस हुजूम जमा भऽ गेल । हुनक रूप-बगय आ मांग देखि लोक बात नहि बूझि रहल छल जे आखिर ई आन्दोलनक कोन तरीका अपनौने छथि । खुसुर-फुसुर चलि रहल छल ।

पदारथकें जखन नहि रहल गेलै तँ ओ आगाँ बढ़ि कऽ कक्कासँ पूछलक-'कक्का ई की ? ककरा खिलाफ अहाँ धरना देने छी !'

कक्का शान्त स्वरमे बजलाह - 'हम अपना लेल आरक्षण आ संरक्षण हेतु धरनापर बैसल छी से देखि नहि रहल छह ।'

- 'से तँ देखि रहल छी मुदा अहाँक माँग कोन तरहक अछि से नहि बूझि रहल छी !'
- 'बुझबहक कोना ! क्यो ककरो बात बुझहे नहि चाहैत अछि तें तँ सौंसे देशमे धरना-प्रदर्शन भऽ रहल अछि ।' - कक्का शान्ते स्वरमे बजलाह ।

रामेश्वर कक्काकें टोनलक - धरना-प्रदर्शन लेल सामाजिक मुद्दा ने होयबाक चाही कक्का, अहाँ असगरे झंडा-तख्ती लऽ कऽ की उनटन करय चाहैत छी ?'

– 'हौ तों सभ तँ एसकरकें अबल बुझैत छलह । मुदा इतिहास देखह आ आजुक युग देखह, असगरे चाणक्य नन्द वंशकें नाश कऽ चन्द्रगुप्तकें सम्राट बना देलनि । असगरे प्रशांत किशोर मोदीकें प्रधानमंत्री आ नीतीशकें मुख्यमंत्री बना देलकनि आ आब राहुल बौआ सेहो प्रशान्तक हौआसँ मुलायम-अखिलेशकें यू.पी.मे शान्त करबा लेल हुंकार भरि रहल छथि । तों सभ नहि बुझबहक एहि तेला-बेलाकें ।' कक्का रामेश्वरोकें निरुत्तर कऽ देलथिन ।

पदारथ फेर कक्काकें टोनलक-'अहूँ कक्का शान्त नहि रहय चाहैत छी, एहिना एखन देश आ समाज अशान्त भेल अछि ।'

आब कक्का फनकि उठलाह – 'हौ, जीवन-संघर्षसँ हारि आत्महत्या कयनिहार वेमूला शहीदक दर्जा पाबि रहल अछि । देश द्रोहक आरोपी देशक नेतागणक प्रेरणास्रोत बनि रहल अछि आ तों सब अशान्तिक बात करैत छह । ई सभ तँ उन्नतिक पौदान मानल जा रहल अछि आ जहाँ धरि हमर मांग अछि ओ तँ एकदम न्यायोचित अछि ।'

– अहाँक की माँग अछि कक्का से तँ बूझी ।' फेकू प्रश्न कयलक । कक्का शुरू भऽ गेलाह– 'ब्राह्मणकें आरक्षण आ संरक्षण देल जाय ।'

– 'अहूँ हद्द करैत छी कक्का, एहि दलित युगमे ब्राह्मणकें आरक्षण आ ताहिपर संरक्षण । ब्राह्मणकें तँ गहूमनोसँ खतरनाक बूझल जाइत छैक आब ।' फेकू कक्काकें बीच्चहिमे रोकैत बाजल । कक्का बूमकार छोड़ैत ठाढ़ भऽ गेलाह-'ब्राह्मणक महत्ता बूझबाक हो तँ लालू बाबूसँ पूछह जे पहिल राजयात्रामे राधा बाबूक शरणमे छलाह । हुनकासँ हेठ भेलाह कि जंगलराज होइत पातालवासी भऽ गेलाह आ पुनर्जीवन मनोज झाजीक संसर्गसँ भेटलनि । हौ, दलितक महिमामंडन बिनु ब्राह्मणक भैये नहि

सकैत छैक । नहि विश्वास होअऽ तँ दलितश्री तारानन्द वियोगी सँ पूछि लहुन जे पं. सहदेव झाक संसर्गसँ आचार्य, वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक प्रसादें साहित्यकार आ मोहन भारद्वाजक मंत्रसँ चिन्तक बनि लहलहा रहल छथि ।'

कक्का कनेक दम लेबऽ लगलाह कि पदारथ कक्काकें कचकचबैत कहलकनि-'अपन दुश्मनकें क्यो सुख-सुविधा दैत छैक जे अहाँ सन निट्ठाह ब्राह्मण सभकें आरक्षण दऽ खतरा मोल लेत !'

कक्काकें रहल नहि गेलनि आरक्षणवला तख्ती त्रिशूल जकाँ भजैत बजलाह – 'बाघ मनुष्यक जानी दुश्मन होइत छैक से बूझल छह ने । तोंही सभ बताबह जे जखन ओ मनुक्खकें पबिते ग्रास बना लैत अछि तखन ओकरा लेल अभयारण्य आ संरक्षण किएक ? जँ बाघकें आरक्षण ओ संरक्षण दऽ पल्लवित-पुष्पित होयबाक सुविधा तँ ब्राह्मण लेल किएक ने ? मानव विरोधी एक जातिकें सर्वसुविधा आ दोसरकें खाली गारि-मारि । आब ई द्वैध नीति नहि चलि सकैछ – एक संस्कार एक व्यवहारक बदलामे सरकारक दुरंगी नीति नहि चलि सकैछ ।' ई कहैत करिया कक्का एक हाथमे तख्ती आ दोसर हाथमे झंडा लहराबैत नारा लगबऽ लगलाह । फेकू, पदारथ आ रामेश्वर भीड़क झुंडमे शामिल भऽ कक्काक सोझासँ निपत्ता भऽ गेल ।

15.2.2016



परिचयक नव फार्मूला

करिया कक्का चौकपर पहुँचलाह तँ बेस भीड़ देखलनि । पदारथक नजरि कक्कापर पड़लैक तँ सहटि कऽ हुनका लग आबि पुछलकनि
— 'अहाँ 'आधार कार्ड' बनौलिऐक की नहि ?'

कक्का बिहुँसैत बजलाह – 'हौ, ई आधार कार्ड गैस–तैस लेल थोड़े बनि रहल छैक । सरकारमे शामिल नेता सभ सत्य पूछऽ तँ जनतेकेँ आब अपराधी मानय लागल अछि तेँ परिचयक ई नव खेल प्रारंभ भेल अछि ।'

— 'अहाँ कोनो बातकेँ सोझसँ किएक नहि लैत छिऐक । एहि नव कार्डसँ लोककेँ बहुतो काजमे आफियत हेतैक ।' पदारथ बाजल।

— 'हौ पदारथ, सोझमतिया लोक तँ सभ दिन कार्डे बनयबाक चक्करमे नचैत रहैत अछि । कहियो राशनकार्ड, कहियो लाल कार्ड, कहियो आइ कार्ड, कहियो हेल्थ कार्ड आ आब आधार कार्ड । मुदा एहि सभसँ ओकर परिचिति कहाँ बनि सकलैक । आ आब ओकर आँखिक पुतरी आ दसो आंगुरक चेन्हक फोटो लऽ कऽ सरकार ओकरा परिचय देबय चाहैत छैक जेना एकटा अपराधीक ई चेन्ह सभ पुलिस अपन कब्जामे राखि कऽ छोड़ि दैत छैक ।'

— 'कक्का आब सभ काजमे दू नम्बरीक प्रवेश भऽ गेल छैक तेँ किछु सतर्कता तँ करहि पड़तैक ।'

— 'हौ, जखन क्यो घरक टैक्स दैत छैक, क्यो खेत–पथारक माल–गुजारी दैत छैक, क्यो नोकरीसँ बन्हायल अछि तँ क्यो व्यवसायसँ । सभक परिचय कायम छैक तखन बेर–बेर भनसेघरक खगताकेँ लक्ष्य कऽ खन गहूम, चीनी, चाउर तँ खन गैस आपूर्तिक भय देखा कऽ परिचय मँगबाक की औचित्य ?'

पदारथ फेर अपन बात रखलक – 'युगानुरूप तँ परिवर्तन होयबेक चाही ने ।'

— 'हँ–हँ होयबेक चाही आ भइये रहल अछि । नेता लोकनि दल–बदल सन घृणित कर्मकेँ मिलन–समारोहक नाम दऽ अभिनंदित भऽ रहल छथि; दल, दलक सिद्धान्त ओ जनताकेँ देल वचनकेँ दल बदलिते कफन ओढ़ा दैत छथि, कुर्सी पयबा लेल वेश्योसँ आगाँ बढ़ि सम्पूर्ण समाजक सोझाँ होयबामे कनियो नहि लजाइत छथि; अपन बेटा–बेटीक विवाहमे 25–50 करोड़ खर्च करैत छथि आ लोककेँ दहेजसँ परहेज करबाक सीख दैत छथि......।'

— कक्काकेँ बीच्चेमे रोकैत पदारथ बाजल–'हाँ–हाँ ऽऽ आब तँ अहाँ चुप्पे ने होयब । आखिर ई ने कहू जे आधार कार्डक एहि उजाहिपर अहाँ की करबै ?'

— 'हौ, ई आधार कार्ड निराधार अछि । खाली लोककेँ तंग कयल जा रहल छैक । जँ सत्ये लोकक असली परिचिति सरकारकेँ चाहिऐक तँ सोझे डी.एन.ए. टेस्ट कराकऽ परिचय कायम होअय । आ सुनह ई काज राजनेते सभसँ प्रारंभ होअय किएक तँ उत्तर प्रदेशक एकटा युवककेँ अपन पिता ताकि परिचय कायम करबा लेल न्यायालयक शरणमे जाय पड़लैक आ एहि विधिक 'आधार' सँ पूर्व मुख्यमंत्री पिता प्राप्त भेलैक । एकटा शोषित–पीड़ित आ परिचयक खगल व्यक्तिकेँ आधार भेटलैक । तेँ हमर राय ई जे आजुक सिद्धान्तहीन, आधारहीन, काक वचनवीर राजनेता सभसँ चुनावपूर्व परिचयक आधार लेल एही विधिकेँ परिचयक नव फार्मूला बना लागू कयल जाय। एहि फार्मूलासँ स्वतः सरकारी मेलक दू नम्बरी खेल समाप्त भऽ जायत।'

ई कहि करिया कक्का ओतऽ सँ विदा भऽ गेलाह । हुनका ईहो सोह नहि रहलनि जे आधार कार्ड बनबाबऽ लेल ओतऽ उपस्थित भीड़ दुनूक नोंक–झोंक सुनि हिनकहि सभकेँ घेरि लेने रहनि ।

8.1.2015

●●●

बुद्धिक बखारीक वर्गीकरण

पदारथ अपस्याँत छल, ओकरा फुराइये ने रहल छलै जे ओ कोना अपन लेख पूरा करय । आखिर दू हजार टाकाक बात छलै । हारि-दारि कऽ करिया कक्काक आश्रमपर पहुँचि गोहारि लगौलक ।

– 'आब अहीं बेरा पार लगबियौक कक्का, मँझधारमे फसल छी ।'

– 'की भेलह हौ, केहन बढ़ियाँ नीके ना छह आ कहैत छह जे मझधारमे... ।' करिया कक्का अडैठीमोड़ लैत बजलाह ।

– 'हँ यौ, ठीके मझधारेमे छी । ई अकादमीवला सभक कते पैरवी कयलापर एकटा कार्यक्रममे सहभागिता करबाक नोत देलक अछि मुदा पढ़बा लेल तेहन ने विषय दऽ देलक अछि जे की लिखी की नहि से किछु फुराइते नहि अछि ।'

– 'तोँहू हद्द करैत छह पदारथ, जे फुराइत छह सैह लिखि दहक, वैह मानक भऽ जयतैक, अकादमी जे करय सैह सुच्चा बाकी सभ लुच्चा ।'

– 'की कक्का, हम अयलहुँ जे अहाँ किछु 'टिप्स' देब मुदा आहाँ तऽ खिल्ली उड़बऽ लगलहुँ ।'

– 'हौ तोँ ने विषयवस्तुसँ अवगत करौलह ने दान-दक्षिणाक बात करै छह आ सोझे सत्ताक चाभी अपना लग राखय लेल ओहिना आफन तोड़ने छह जेना बिहारक नेता सभ कयने छथि ।'

– 'एखन छोड़ू ओ बात सभ ई कहू जे मैथिलीक लेखकीय प्रकारकेँ कोना फरिछाओल जाय !'

– 'की मतलब तोहर छह हौ, आब लेखकक वर्गीकरणपर सेहो विचार कयल जाइत छैक ?

– 'हमर कहबाक अभिप्राय ई अछि कक्का जे अकादमी विषयगत लेखकक सूची बनबऽ चाहैत अछि जे ककरा कोन विधाक श्रेणीमे राखल जाय जाहिसँ कि ओकरा आगाँ सुविधा होइक कोनो विषयपर विचार करबा लेल । हमरा एही दृष्टिकोणसँ आलेख तैयार करबाक अछि ।'

– 'तँ एहिमे कोन दिक्कत छह, जकरा जाहि श्रेणीमे रखबाक हो राखि दहक । मैथिलीक लेखक महाकाव्यसँ लऽ कऽ नाटक, उपन्यास, कथा, व्यंग्य, निबंध, रिपोर्ताज सभ किछु लिखि लैए, अवसरटा भेटबाक चाही । मात्र दू गोत्र (भारद्वाज-रमण) पाँजिक लेखक छोड़ि कऽ, कारण ई मैथिलीक पैथोलॉजिस्ट श्रेणीमे अबैत छथि ।'

– 'कक्का तखन तँ हमर लेख लेख नहि भऽ ऑलराउन्डरक सूची भऽ जायत आ लोक हँसत । कोनो दोसर युक्ति बताउ ।'

कक्का मुस्काइत बजलाह-'जँ शास्त्रीय विवेचन करबाक हो तँ धनबली, पदबली, पैरवीबली, दरबारवली, दक्षिणपंथी, वामपंथी, दछिनाहा, कुलीन, दलित आदि कोटिक जे लेखक छथि तनिक विस्तृत-व्यापक व्याख्या करैत आदि इत्यादिमे साहित्यसेवी, भाषासेवीक कोनहुना चर्चो टा कऽ देबहक तँ तोहर आलेख अकादमीक विशेष दर्जा पाबि लेतह आ तोँ अकादेमीक लेखकक मानद श्रेणीमे आबि जयबह, जेना पत्र-पत्रिकाक लेखक, आकाशवाणी-दूरदर्शनक लेखक आ पोथीक लेखकक पृथक-पृथक श्रेणी बनल छैक ।'

ई कहैत करिया कक्का डोल आ लोटा लऽ पानि भरय इनारपर विदा भऽ गेलाह आ पदारथ सेहो अपन बुद्धिक बखारी भरि जयबाक कारणे हुलसैत अपन घर दिस विदा भऽ गेल ।

19.2.2015



बुरबकहा खेत अगिला साल

'अछि क्यो जे हमरा एहि कुर्सीसँ हिला-डुला दिअय, अछि एक्कोटा वीर जे हमरा एहि परसँ उठा कऽ फेकि दिअय आ स्वयं एहिपर बैसि जाय, अछि क्यो मर्द जे हमरा एहिपरसँ हटयबाक चुनौती दऽ सकय.... ।'

करिया कक्का अपन बहरघरामे आरामकुर्सीपर बैसल आगाँ-पाछाँ डोलैत बड़बड़ा रहल छलाह कि पदारथ ओहिठाम जुमैत बाजल-'की कक्का बसियौराक भांग लगले अछि एखन धरि ! एकाध गिलास आर दियौ तखने भक टुटत ।'

— 'हौ पदारथ हमरा भांग की लागत हमही" भांगके" लागि जाइत छिऐक जेना हम एहि कुर्सी संग लागल छी ।'

— 'की कहलिऐ कक्का, अहाँ कुर्सी संग लागल छी, एकर की मतलब ?' पदारथ पूछलक ।

— 'तो" सभ दिन बकलेले रहि जयबह 'सरकार' जकाँ, जकरा पजियाबऽ सभ चाहैत अछि मुदा इज्जत क्यो नहि करैत अछि। तोरा बजबैत सभ छह अपन दलानपर मुदा कुर्सी दैत छह कहियो । जनता जनार्दन जकाँ अखरा चौकीपर बैसा दैत छह तँ कुर्सीपर बैसबाक चस्का केहन होइत छैक से कोना बुझबहक ।'

— 'की कक्का, हम अयलहुँ जे अहाँ लग फगुआक बसियौरामे किछु चलतैक मुदा अहाँ तँ कुर्सी, अखरा चौकी आ किदन कहाँदनक गप्प उठा देलहुँ ।'

— 'यैह-यैह तँ हम बुझैत छी जे सुधंग-एकमुंहा सभके" फगुआक प्रसादक बसियौरा-तसियौरा आ कि सभ दिनाक व्यवस्था कऽ

ई कुर्सी प्रेमी सभ अपन सुतारि लैए आ तोरा सन-सन लोक एमहरसँ ओमहर दौड़े-बरहामे बिता दैए ।'

— 'यौ कक्का एना नहि बाजू, हमरा ताव नहि दिआउ, बड़का-बड़काक कुर्सी छिनाइत कि गति होइत छनि से 'विदित' नहि अछि की । आइ भने सुशासन बाबू एकटा निरीह माझीसँ पतवार लऽ बिहारक नाव खेवि रहल छथि मुदा ई जुनि बिसरियौ जे हमरे निरस्लासँ आइ नवरत्न गोष्ठीसँ रत्न सभ ससरि गेल भंगघोट-बाबा रहि गेल, हमरे छिरियेलासँ आ रामदेव बाबा झाम गुड़ि रहल छथि । हम विराट रूपमे अयलहुँ तँ दिल्ली दूर नहि रहल । तें ई कुर्सीक लोभ नहि देखाउ हमरा ।'

— तो" तँ बगदि गेलह पदारथ, हौ पहिने कुर्सी देल जाइत छल मुदा आब तँ हड़पल वा छिनल जाइत अछि । ई कहऽ जे तोरा की नीक लगैत छह ।'

पदारथ धीरेसँ बाजल – मुकुट अथवा कुर्सी ककरा नीक नहि लगै छै मुदा फगुआ दिन मूर्खाधिराज आ मूर्ख शिरोमणिक पदवी दऽ कऽ जनिका लोकनिके" सिंहासन देल गेलनि से की उचित छल ? एहि बेर तँ मूर्ख शिरोमणि रवीन्द्रके" आ मूर्खाधिरानीक सिंहासन उषाजीके" भेटबाक चाहैत छलनि । मुदा की कहू चानी सन चानिवला 'नरेन्द्रश्री' ओ पट्टआ सन उज्जर केशवला 'विजयश्री' जेना संघ आ समितिके" दफानने छथि तहिना मूर्खोवला कुर्सी दफानि लेलनि ।'

— चलह, बुरबकहा खेत अगिला साल । हम एहीसँ तिरपित भेलहुँ जे तो" बुझनुक भऽ गेलह । अगिला फगुआ अबैत-अबैत तो"हूँ कोनो ने कोनो कुर्सी पाबिये लेबह ।'

ई कहैत करिया कक्का फेरसँ कुर्सीपर झूलय लगलाह आ पदारथ ओहिठाम राखल भांग पीसय लागल ।

12.03.2015



'लीव इन रिलेशन'सँ जनमल सुन्नर नेना

तीनदिना थकनीक बाद करिया कक्का सभ किछु बिसरि अपन बहरघरा मे निसभेर छलाह । पदारथ से बुझलक नहि आ दलानपर पहुँचि 'करिया कक्का छी यौ, यौ करिया कक्का'क, अनघोल कऽ उठल । चिहुँकैत आ आँखि मिड़ैत कक्का बजलाह-'तोँहू अनकह्ले करैत छह, मुदा छोड़ह, आबह आ कहह जे किएक अनघोल कयने छलऽ ।'

— 'अयँ यौ कक्का अहाँ अंग्रेजी विरोधी मैथिलीक ध्वजवाहक तखन पटनामे भेल 'मैथिली लिटरेचर फेस्टीवल' मे कोना सन्हिया गेलिऐ । समाचार पढ़ि पूरा गाम खिधांश कऽ रहल अछि ।' पदारथ करिया कक्कापर बम फोड़लक ।

करिया कक्का सेहो जोरदार ठहक्काक प्रत्युत्तरबम फोड़ैत बजलाह-'हौ जेना लेखक संघ एहि अंग्रेजी नामकरणसँ साहित्योत्सवक अनघोल कयने रहल आ पत्रकार जगत मैथिली पत्रकारिता पर विमर्श नहि कयल जयबाक कारणे एहि उत्सवकेँ तिलकोरापात आ मखानक व्यंजनक स्वादक सुगंधक रूपमे परसैत रहल तहिना हमहूँ एहि 'फेस्टीवल'मे जानि-बुझि कऽ भाषा विरोधी साहित्यकार लोकनिकेँ बकानि पियाबऽ लेल ओतऽ पहुँचि गेल रही से नहि सुनलह ।'

— 'छोड़ू-छोड़ू कक्का बातमे अहाँसँ के जीतत, ई कहू जे ओतऽ नीक बेजाय की भेलैक !' पदारथ प्रश्न कयलक ।

— 'हौ की कहियऽ ओतऽ सभ दिस उनटे बसात बहैत भेटल मुदा से सुखद लागल ।'

— 'से की कक्का ?' पदारथ पूरक प्रश्न कयलक ।

— 'की कहियऽ पदारथ, यूथ क्लबमे भेल एहि आयोजनमे युवा

लेल एक्कोटा सत्र नहि छल मुदा आयोजन समारोहक कार्यालय, इन्टरनेट ओ मीडियामे प्रचार, पोथी खरीद आ समस्त कार्यक्रममे भारी संख्यामे मैथिलीक शोधार्थी-विद्यार्थी-युवा जेना शालीनतापूर्वक सहभागी बनल रहल से देखवा योग छल । आ सुनह ई देखि बिहारक आन भाषी छगुन्तामे छल जे एहूमे मैथिलवा सभ हमरा सभकेँ पछाड़ि देलक ।'

— 'ई सभ राजनीतिक बात छै , समारोहोमे राजनीति भेलैक की नहि!'

— 'हौ खूबे भेलैक । बिनु सरकारी सहायता आ राजनेतालोकनिक समावेश कयने सम्पन्न भेल एहि उत्सवमे नेतालोकनि दर्शक रूपमे उपस्थित भऽ अपन कर्त्तव्यक निर्वाह कयलनि तँ दोसर दिस पटनाक विख्यात समितिक विषपिपड़ी पी.आर.ओ. साहित्यकार एहू समारोहमे शामिल भऽ नेपाली साहित्यकार-समाज संग तेहन ने राजनीति कयलनि जे क्षुब्ध भऽ ओ लोकनि बटुआमे आनल 'नेरू' सहयोग राशि ओहिना आपस अपना संगे लऽ गेलाह ।'

— 'यौ कक्का ई सभ तँ होइते रहैत छैक, एकर भविष्य की छैक से ने कहू ।'

— 'हौ, समारोह सफल रहलैक ताहिमे सन्देह नहि । मुदा सफलता आ प्रशंसा ककरो असमान चढ़ा दैत छैक तँ ककरो पताल धँसा दैत छैक । आब देखबाक ई अछि जे 'लीव इन रिलेशन' सँ जनमल ई सुन्नर नेना ककर कोरामे खेलाइत-धुपाइत बढ़ैत अछि - कोखि देनिहार मायक कोरामे आ कि संग रहि नाम देनिहार पिताक कोरामे ।'

ई कहैत करिया कक्का फेर चद्दरि तानि पड़ि रहलाह आ पदारथ बात नहि बुझबाक कारणे अनमनस्क भावें ओतऽसँ विदा भऽ गेल ।

18.12.2014

●●●

'सरकार'क लिंग परीक्षण

'सरकार-सरकार-सरकार, आखिर सभ सरकारेकेँ किएक पजियाबऽ चाहैत अछि', - स्वतः बजैत करिया कक्का निरंतर टहलि रहल छलाह । खने बाजथि आ खने दुनू हाथ पाछाँ दिस कऽ टहलऽ लागथि । अकस्मात भभा कऽ हँसलाह कि नजरि वीरेन पर पड़लनि । ओ लग अबैत पुछलकनि- 'की कक्का कोन बात स्मरण भऽ आयल जे एसगरेमे हँसैत छलहुँ ?'

— 'हौ ज्ञान झाक योगसँ बुझबामे आयल जे सभ सरकारेकेँ किएक पजियाबऽ चाहैत अछि ।'

— 'सरकार सभकेँ चाहिऐक, एकर की मतलब ।' वीरेन पुछलकनि ।

— आयँ हौ, सौँसे देशक नेता सरकारकेँ लुझबाक लेल कोनो करम बांकी नहि छोड़लक आ तोँ कहैत छह एकर की मतलब । सौँसे रामायण सुनि लेलह एहि चारि-पाँच मासमे आ पुछैत छह सीता ककर बहु, ई तँ सैह परि भेलह ।'

— 'यौ कक्का, हमरा फरिछा कऽ बुझाउ । हम अहाँ जकाँ पाको पंडित नहि छी जे सभ किछु अपनेसँ बूझि जायब ।'

— 'बुझहे चाहैत छह तँ कहऽ आजुक लोक कनियाँ केहन तकैत अछि - काजुल, पढ़लि-लिखलि, कमासुत आ दिव्य सुन्दरी, सैह ने !'

— 'हँ-हँ, युगक मांगे सैह छैक, किएक ने चाहत ।' वीरेन बाजल ।

— 'तँ सुनह 'सरकार' जे होइत छैक आइ काल्हुक तकरोमे ई स्त्रैण गुण सभ छैक आ तोहर राष्ट्र लिंग-परीक्षणक उपरांत ओकरा नारियेक दर्जा देने छैक । आब तोँही कहऽ जे एकटा

द्रोपदीक कारणे ओतेक बड़का महाभारत भऽ गेलैक तँ तोहर देशक स्त्री-गुणसँ परिपुरित सरकारकेँ अपनयबा लेल किएक ने घमासान होअय !'

— 'कक्का, देशक बात छोड़ू हमर मैथिलीमे लिंग-परीक्षणक झंझटिये नहि अछि तेँ हम ई बात नहि मानब ।' करिया कक्का ओकर बातकेँ लपकैत बजलाह – 'मानबऽ कोना ने हौ, तोंहू सभ तँ मैथिलक एक पुरुषवेश धारीकेँ अपन 'सरकार' बनौलह मुदा एक्कोटा काज ओ पुरुषवला कऽ सकलथुन । कहियो आचार्य अरिष्टनेमीक बहिकिरनी बनि दिन कटलनि तँ आब एकटा संघमे द्रोपदी बनि सौभाग्यवती बनल छ्थुन । स्त्रैण गुणसँ सम्पन्न ओहो 'सरकार' लिंग-परीक्षणमे सय प्रतिशत राष्ट्रक सरकारक प्रतिरूपे ने छ्थुन ।'

— 'छोड़ू कक्का ई सभ गप्प । असली गप्प कहू जे सरकार ककर बनतैक, बड़-बड़ भविष्यवाणी भऽ रहल छैक ।'

— 'हौ तोँ निश्चिन्त भऽ कऽ रहऽ किएक तँ आबक 'सरकार' गृहिणी नहि भऽ रखैल जकाँ रहैत छैक । जकरा लग रहैत छैक तकरे टा लेल सोचैत छैक, घर-परिवार लेल नहि, समाजक मान-मर्यादक लेल नहि आ ने देशक लेल । मुदा जेना गृहिणीसँ लोक वंशवृद्धि, घरक देखभाल आ आब कमासुत होयबाक अपेक्षा रखैत अछि तहिना नेतालोकनि सरकारसँ एहि तीनू सुखकेँ प्राप्त करबाक हेतु पजियाबऽ चाहैत छथि । रहल जनताक प्रश्न तँ ओ तँ कुसियार जकाँ सभ दिन पेराइते रहत किएक तँ अपन राष्ट्रमे ओहो नारियेक रूपमे अपन परिचिति बनौने अछि ।'

ई कहि करिया कक्का पुनः भभा कऽ हँसलाह आ वीरेन अपन सन मुँह बना हुनका एकटक देखैत रहल ।

15.5.2014



व्यंग्य लिखबाक व्योंत

काँखतर छत्ता दबौने करिया कक्का किछु सोचैत बाटपर आगाँ बढ़ल जा रहल छलाह । लूटनक घर लग पहुँचैत ओ ओकर दलान पर नजरि खिरौलनि । लूटन हाथमे कापी-कलम लेने दलानपर टहलि रहल छल आ किछु-किछु बुदबुदा रहल छल । करिया कक्काकेँ आश्चर्य भेलनि-लूटन आ कापी-कलम, की बात ! ओ ओकर दलानक सोझाँमे पहुँचि टोकारा देलथिन ।

— 'की हौ लूटन, ई कापी-कलम लऽ कऽ की कऽ रहल छह ?'
— 'आउ-आउ कक्का । बात ई छै जे हमरा एकटा व्यंग्य लिखबाक अछि मुदा सुतरिये ने रहल अछि ।' लूटन सुस्त स्वरेँ बाजल ।
— 'तोँ आ व्यंग्य ! अँय हौ, तोँ कहिया लेखक भऽ गेलह । एहि दलानसँ ओहि दलानपर टहलैत गोलैसी करैत छह आ आब लेखकक बाना धरैत छह ।'
— 'ओह कक्का, अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे हम आकाशवाणीक लेखक छी, दिल्ली-पटनाक कैक टा मंचपर बतौर लेखक भाग लैत रहलहुँ अछि तखन अहाँ एना किएक कहैत छी ।' लूटन नहुँ-नहुँ मुस्काइत बाजल ।
— 'हौ, हमरो बूझल अछि जे तोँ ई सभ करैत छह । आचार्य अरिष्टनेमिक दरबारी बनि मंच सभक तिरपेच्छन कयलह मुदा जेना अवसरवादी नेता दल बदलैत अछि, टिकट पयबा लेल सिद्धान्तक बलि दैत अछि आ जनताक कल्याणसँ संभ दिन दूरे रहैत अछि तहिना तँ तोँहू सभ दिन कागज-कलमसँ दूरे रहलह आ आब व्यंग्य लिखबाक व्योंतमे छह । हौ, व्यंग्य-लेखन की राजनीतिक दलक घोषणा-पत्र छैक जे हरही-सुरही सभ तैयार कऽ लिअय ।' कक्का लूटनकेँ व्यंग्यक घोंट पियौलथिन ।

— 'अहाँ जे कहू कक्का मुदा हम तँ व्यंग्य लिखिये कऽ रहब चाहे जेना....।' करिया कक्का लूटनक गप्पकेँ कटैत बजलाह-'तँ जाह वीणावादिनी लग । आब ओ विद्यालय-महाविद्यालयमे नहि पशु महाविद्यालयमे डेरा खसौने छ्थुन आ लेखक-साहित्यकारकेँ 'भेटनरी डोज' दिया हुनक क्षमतामे अभिवृद्धिक जोगार धरा रहल छ्थुन । तोँहू जाह हुनका लग । व्यंग्य लेखनकेँ के पूछ्य राताराती नाटककार, उपन्यासकार भऽ जयबह ।'
— 'अहूँ कक्का हद्दे करैत छी, सभ बातकेँ मजाके बना दैत छिऐक।'
— 'हौ, हम मजाक बनबैत छिऐक की तोँ सभ । देखैत छह राजनीतिक दलक हाल । मुखिया छोड़ि सभ श्रेणीक नेता, सांसद-विधायक जेना लोक अंगा बदलैत अछि तेना पाटी बदलि रहल अछि, किएक तँ टिकट पयबा लेल । तहिना तोँहू व्यंग्य लेखनकेँ साहित्यकार बनबा लेल, टिकट बूझि अपस्याँत छह । हौ, हम तँ कहबह जे लिखबाक झंझटेमे नहि पड़ह । ककरोसँ लिखबा कऽ व्यंग्यकार बनि जाह ।' कक्का फुसफुसाइत लूटनकेँ विचार देलथिन ।
— 'कक्का की ई संभव छैक ?' लूटन दाँत निपोड़ैत बाजल ।
— 'किएक ने संभव छैक । जखन अनकासँ लिखबा कऽ क्यो पी-एच.डी. कऽ सकैत अछि; भाषा-साहित्य आ पत्रकारिताक ज्ञान बिना क्यो सम्पादक बनि सकैत अछि; भ्रष्टाचारी, बलात्कारी आ अज्ञानी देशक सत्तामे शामिल भऽ सकैत अछि; उद्योगपति जकाँ साधु-संत गेरुआ वस्त्र धारण कऽ लोककेँ लुटि सकैत अछि तँ तोरा सन दरबारी, दलबदलू, अवसरवादी व्यक्ति ककरोसँ व्यंग्य लिखबा कऽ व्यंग्यकार किएक ने भऽ सकैत अछि ।'

ई कहैत करिया कक्का काँखतरसँ छत्ता निकालि तानि लेलनि आ सड़कपर आबि अपन गन्तव्य दिस विदा भऽ गेलाह । लूटन हुनका टुकुर-टुकुर जाइत देखैत रहल ।

27.3.2014



राजनीति नाम केवलम्

करिया कक्का दलानपर बैसल माला जपि रहल छलाह । कखनो–कखनो बुदबुदा उठथि–'राधेकृष्ण–राधेकृष्ण ।' एकाएक ओ मालाक पोटरी चौकीपर राखि उठलाह आ आलमारीसँ गाँधी टोपी निकालि पहीरि लेलनि । फेर पोटरी उठा जाप शुरू कऽ देलनि । आब बीच–बीचमे स्वयंसँ बाजि उठथि–'राजनीति नाम केवलम् ।'

हुनक ई प्रक्रिया चलिये रहल छल कि हुनक दलानपर पदारथ पहुँचल । करिया कक्काकेँ गाँधी टोपी पहिरने देखि चौँकल । कक्काकेँ गंभीर स्वरमे टोकलक ।

— 'की कक्का, आइ ई की देखि रहल छी – हाथमे माला आ माथपर टोपी ?'

— 'तँ कोन अजगूत बात देखि लेलह । गाँधी टोपिये ने एहि देशमे पेन्शनक परमिट रहि गेलैक अछि आब ?'

— 'से की कहि रहल छिऐक ? कने बुझा कऽ कहबैक तखन ने । पेन्शन, गाँधी टोपी आ परमिट एहि तीनूक मेल कहाँ ?'

— 'हौ, तोँ सभ स्वयं बेमेल भऽ गेल छह तँ मेलक बात की बुझबहक । घरमे सायं–बहुमे मेल नहि, स्कूल–कालेजमे शिक्षक–विद्यार्थीमे मेल नहि, आफिस–कचहरीमे किरानी–हाकिममे मेल नहि । आर तँ आर प्रदेश आ देशक सरकारोमे मेल नहि छैक तँ तोँ कोना बुझबहक टोपी, पेन्शन आ परमिटक मेल !'

— 'तँ अहीँ बुझा दियऽ ने एकर मूलमंत्र ।'

— 'आब एलह तोँ रस्तापर । तोँही कहऽ जे आजुक जे हवा चललैए ताहिमे आब ककरो असालतन नोकरी होइ छै जे पेंशन भेटतै ।'

— 'ठीके कहै छिऐ कक्का अहाँ तँ । आब तँ शिक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, किरानी, चपरासी सभ ठीकेपर काज करै छै । आ आब तँ नोकरी के कहय सरकार व्यवस्थोकेँ पूरा–पूरी ठीके पर दऽ रहल छै, जेना बिजली, सफाई, स्वास्थ्य आदि ।'

— 'हौ, एखन की देखलहक अछि समय आबि रहल छै जे हमर नेता सभ गाम, प्रखंड आ जिलाक व्यवस्था सेहो ठीके पर दऽ देतै जे बचल – खुचल पद सेहो पेन्शनविहिन भऽ जाइ ।'

— 'तखन तँ अहाँ जे कहलिअइ जे पेन्शनक परमिटक बात तँ सेहो ने खतम भऽ जेतइ ।'

— 'यैह तँ नहि बुझलहक तोँ । ई बात कोन कोनसँ उठलैक अछि जे विधायक–सांसद सरकारी सेवक छैक जे ओकरा पेन्शन भेटैत छैक । की ओ नोकरी करैत अछि जे ओकरा पेन्शन भेटतैक ?'

— 'नहि कक्का ओ तँ राजनेता होइछ जे समाज सेवा लेल राजनीतिमे अबैछ ।'

— 'तँ तोरा की बुझाइत छह जे हम सरकारी सेवक नोकरिहारा छी। हमहूँ तँ समाजसेवक छी । तेँ आइसँ एहि मालापर 'राजनीति नाम केवलम्'क जाप प्रारंभ कऽ देलहुँ अछि आ पेंशनक परमिट पयबा लेल गाँधी टोपी रूपी एन्टेना धारण कऽ लेलहुँ अछि ।'

ई कहैत करिया कक्का माथपर टोपी टेढ़ करैत जाप शुरू कऽ देलनि आ पदारथ ओतऽसँ विदा भऽ गेल ।

12.2.2014



जेहन दीक्षा तेहने छिच्छा

— 'आयँ यौ कक्का, आइकाल्हि जे पारिवारिक ओझरौट, समाजमे उच्छृंखलता, अनाचार, व्यभिचार बढ़ि रहल छैक आ सत्यताक लोप, परिश्रमक महत्ता कम भेल जा रहल छैक तकर की कारण ?'

पदारथ करिया कक्काकेँ शान्तिचित्त बैसल देखि गंभीर प्रश्न कयलक । करिया कक्का जेना पहिनहिसँ उत्तर सोचि कऽ रखने होथि, तपाकसँ उत्तर देलथिन-'मनुष्य अपन सभसँ पैघ गुण 'भय' केँ त्यागि देलक अछि तेँ ई सभ ।'

पदारथ चौंकैत बाजल – 'अहूँ कक्का हद्दे करैत छी भय अलग चिज छैक आ हम जे पुछलहुँ अछि से अलग । दुनूकेँ कोनो सरोकारे नहि छैक तखन अहाँ एना किएक कहैत छिऐक ।'

— 'हौ, काल्हिये ने कहने छलऽ जे पटनामे तोँ खुलेआम ऑटो आ बसमे, पार्कमे आ विद्यालय-महाविद्यालयमे युवक-युवतीकेँ अश्लील आचरण करैत देखलहक ।'

— 'हँ, कहने रही, मुदा ओतऽ तँ शहरी वातावरण छैक, किछु विवशता आ किछु सख-मौज लेल ओ सभ ओना करैत होयत ।'

— 'नै हौ, ओ सभ ई वृत्ति ने विवशतावश करैत छैक आ ने सख मौजक रुपमे । भयक नाश भेलाक कारणे आब ई फैशनक रूप धऽ रहल अछि धीरे-धीरे ।' कक्का विषयकेँ कने मोड़ैत पुनः बजलाह – 'छोड़ऽ, युवावर्ग तँ युवावर्ग तोँ कहऽ जे चारि बच्चाक़ बाप आ चारि बच्चाक माय जे आब परिवारमे आकि समाजमे जे-जे वृत्ति कऽ नाम कमा रहल अछि तकरा तोँ की कहबहक ।'

— 'अहाँ कहय की चाहैत छी कक्का से नहि बुझि रहल छी । ने हमर प्रश्नक उत्तर भेटि रहल अछि आ ने बाते फरिया रहल अछि ।'

पदारथ कक्काकेँ सोझ डारिपर आनय चाहैत छल । कक्का तमाकू झाड़ैत खुलासा कयलनि – 'भयक नाशसँ लज्याक बोलबाला आ लज्याक बोलबाला होइतहि अश्लीलताक उद्दाम प्रदर्शन, उच्छृंखलतामे आनन्द, अनाचार-व्यभिचारक कर्ममे आशक्ति तँ होयब स्वाभाविके ने छैक हौ । आ तोँही कहह जतऽ एक संग एतेक रास प्रवृत्ति-दुर्प्रवृत्तिक रुपमे देखार भऽ जाय ततऽ सत्यक प्रति निष्ठा आकि परिश्रमक महत्ता दिस क्यो ध्यान देत ।'

— 'आखिर एकर अन्त कहिया होयत ?' पदारथ कक्कासँ ठोस उत्तर चाहलक ।

करिया कक्का भभाकऽ हँसलाह – 'जाहि समाजमे शिक्षक, चिकित्सक, पदाधिकारी, प्रशासक, रक्षक, नेता भयक त्याग कऽ निर्लज्जतापूर्ण अपन वृत्तिक धर्म छोड़ि लूट-खसोट, भ्रष्टाचार-अनाचारमे लिप्त रहय; घरक अभिभावक निशांमे बुत्त भऽ घर आबय; दादी-नानी बनल महिला अपन सोहाग प्रतीक सिन्दूरसँ भरल सींथकेँ लटसँ झाँपि सड़कपर छमछम करैत युवतीक स्वांग धरय ताहिठाम 'नवांकुर' युवा-युवतीमे दोष तकैत छह । जखन जड़ियेमे नोनी लागि गेल छह तखन तोँ छीपकेँ किएक दोषाह मानैत छह । हौ, जेहन दीक्षा भेट्तैक तेहने ने छिच्छा देखबह ।'

ई कहैत करिया कक्का पुनः गंभीर भऽ गेलाह आ पदारथ हुनक कहल बातक अर्थकेँ गुनयमे ओझरा गेल ।

27.11.2014



कोरामे नेना, नगरमे सोर

करिया कक्का ओलतीमे लागल लौंगिया मेरचाइक कात-करौटमे उगल घास-फूसकेँ खुरपीसँ उपाड़ि कऽ साफ कऽ रहल छलाह आ नहुएँ-नहुएँ एकटा गजल गुनगुना रहल छलाह -

"संसारमे जे सार अछि, व्यापार गोलैसी
दुनियाँ भरिक सभ कारमे सुख-सार गोलैसी"

हुनका पाछाँमे आबि ठाढ़ पदारथ कक्काक मुँहसँ गजल सुनि चौंकि उठल । कक्काकेँ टोकैत बाजल-'की यौ कक्का, मेरचाइक जड़िमे गोलैसी कतऽसँ अभरल जे अहाँ गजल गाबि रहल छी ।'

करिया कक्का खुरपी झाड़ैत ठाढ़ भऽ बजलाह -

'ई गोलैसिये ने छै हौ जे पुरना सरकार ठकैत-ठकैत सत्ता रूपी गाछसँ तुबि कऽ नीचाँ खसि पड़ल मुदा भेद नहि खोललक आ आब देखह जे नवको सरकार वैह धुन गाबि रहल अछि ।'

— 'बुझलहुँ नहि कक्का जे कोन मादे ई गप्प एतेक ओझरायल सन भाषामे बाजि रहल छी ।' पदारथ प्रश्नवाचक दृष्टियें कक्का दिस तकैत बाजल ।

— हौ तोँ नहि बुझबहक, साहित्यकार ने छह । हिन्दुस्तानमे साहित्यकारकेँ देबऽ लेल 'फंड' नहि छैक मुदा एकटा सांसदक घरसँ चोर-बनोल करोड़ो टाका चोरा लैत छैक तँ दोसर चोर पूर्व सांसदक घरसँ करोड़ो टाका आ करोड़ो टाकाक गहना चोरा कऽ ओहि चोरकेँ औंठा देखा दैत छैक । मुदा हमरा देशक सांसदक जमातकेँ जे सरकार बना पुलिस-जासूसक फौज रखने अछि तकरा, आइ धरि पते ने लागि रहल छैक जे देश अथवा

विदेशमे ककर आ कतेक करिया धन नुकायल छैक ।' करिया कक्का विषय प्रवर्तन करैत खुलासा कयलनि ।

— 'कक्का अहूँ हद्दे करैत छी, सांसदलोकनि ने तँ जासूस छथि आ ने अगमजानी, तखन ओ करिया धन कतऽ छैक से ओ कोना खुलासा करताह - पदारथ बाजल ।

— 'हौ कहबी छैक ने - 'कोरामे नेना, नगरमे सोर' सैह परि एहि देशमे भऽ रहल छैक । जखन एकटा-दूटा सांसदक ई हाल जे हुनका घरसँ विदेशी टाका सहित करोड़ोक चोरि होइछ तँ डकैती होयत तँ कतेक निकलत !' कक्का संकेतेसँ करिया धनक ठेकानपर चोट कयलनि ।

— 'बुझलहुँ कक्का अहाँ की कहय चाहैत छी मुदा ई संभव नहि, एकाधटा अपवादो होइत छैक ने !'

— 'की कहलह, भात पसौलह अछि कहियो ! दू चारिये दानासँ सिद्ध-असिद्धक अटकर लागि जाइत छैक । हम तँ धन्यवाद दैत छिऐक ओहि चोर सभकेँ जे करिया धनक खोज कोना कयल जाय से बाट खुफिया तंत्रकेँ सुझा देलकैए । हौ, ओकरा आँखिमे कनियो पानि हेतै तँ लेत ओकरासँ प्रेरणा । ओना हम जनैत छी जे गोलैसीक व्यापार देखि खुफिया-तंत्र सेहो अपन जोगार लेल स्वीट्जरलैन्डक सुट-सुट आवाजाही करैत रहत आ एहि देशक सभ लोक अपना माथपर साढ़े सात हजार टाकाक सरकारी ऋण उघैत गोनू झाक तमघैल भेटबाक प्रत्याशामे गदगद होइत रहत ।'

ई कहि करिया कक्का पुनः बैसि कऽ खुरपी चलबय लगलाह आ पदारथ हुनकेसँ सुनल गजलकेँ गुनगुनाइत सड़क दिस विदा भऽ गेल ।

7.8.2014

●●●

बदलैत समाजशास्त्रक झाँकी

करिया कक्का अपन आठ वर्षीय पौत्रसँ पुछलथिन– 'बाउ, अहाँ पैघ भऽ कऽ की बनब ?'

पौत्र तपाकसँ उत्तर देलकनि – 'पुलिस बनबै बाबा यौ ।'

– 'से किए ?' करिया कक्का पुनः पुछलथिन । पौत्रके जेना पहिनेसँ उत्तर सोचल छलै, बाजि उठल– 'पुलिसके सभ काज मंगनीमे भऽ जाइ छै तेँ ।'

कक्का गंभीर भऽ पुछलथिन – 'से अहाँ कोना बुझलिऐक ।'

– 'राम भैया कहै छला जे हुनकर बाबू कतौ जाइ छथिन तँ किराया नइं लगै छनि, मिठाइवलाके बिना पाइ देने मधुर लऽ अबैत छथिन आ माछो मंगनियेमे अनैत छथि ।' पौत्र कने काल रुकल आ पुनः बाजल – 'बाबा हम तँ पुलिसे बनब ।'

करिया कक्का गंभीर भऽ उठलाह अपन पौत्रक संभाषणसँ । हुनका कैकटा दृश्य स्मरण भऽ उठलनि । वर्दी पहिरने सिपाही ऑटोपर चढ़ल आ अपन गन्तव्यपर पहुँचि बिनु मासूल देने चल गेल । चाहक दोकानपर चाह पीबि बिनु पाइ देने चल गेल । बलजोरी कोनो दोकानसँ कोनो समान उठा कऽ चल गेल । वर्दीक कमालक आर दृश्य सभ सिनेमाक रील जकाँ हुनका आगाँ चलि रहल छलनि कि विमलजीक टोकारासँ चिहुँकि उठलाह ।

– 'की यौ करिया कक्का कोन सोचमे पड़ल छी जे अयनिहार गेनिहार पर ध्यान नहि अछि ?'

करिया कक्का बजलाह – 'वर्दीक खेला देखिकऽ छगुन्तामे पड़ल छी जे धीयो-पूता आब वर्दियेवला नोकरी चाहैत अछि ।'

– 'बुझलहुँ नहि कक्का वर्दीवलाक खेलक मतलब ! की पुलिसक विषयमे किछु कहि रहल छी?'

– 'हँ हौ, धीया-पूता कहैत अछि जे पुलिसेक नोकरी करब किएक तँ ओकरा मंगनियेमे सभ काज भऽ जाइत छैक ।'

– 'हँ यौ, कहैत कोनो बेजाय तँ नहि अछि, जखन ओ एक्केमुश्त दऽ कऽ नोकरीमे अबैत छैक आ वर्दीनुमा लाइसेंस ओढ़ि लैत छैक तखन ओ खर्च किएक करत । एहि लेल तँ अहाँके खाकीवलासँ पहिने खादीवला वर्दीक फिकिर करय पड़त जे पाँचे वर्षमे जमीन्दार बनि जाइत अछि' – विमलजी बजलाह ।

– 'की बात छै हौ आइ तों बड़ बुझनुक जकाँ बाजि रहल छह ।' -कक्का सुस्त स्वरे बजलाह ।

– 'हम की बुझायब कक्का अहाँके । आइ एकटा नेना अहाँके बदलैत समाजशास्त्रक झाँकी देखा देलक आ हम-अहाँ, नीक दिनक कल्पनामे उब-डूब कऽ रहल छी ।' विमल सफाई देलनि ।

– 'हौ बुझैत तँ छिऐक हम सत्यानाश धरि, झाड़ू पाटी एकरे विरोधमे ठाढ़ भेल मुदा अपने बहरा कऽ फेका गेल । लगैए आब हमरे-तोरे एहन मंगनिया समाजके खंड-पखंड करय लेल नव शास्त्र गढ़य पड़त, आ कि नहि ।'

ई कहि करिया कक्का चुप्प भऽ गेलाह ।

26.6.2014

●●●

पुरस्कार विज्ञानक फलाफल

मौसम विज्ञानपर चर्चा बजरल छल । योगानन्द कहथि जे एहिबेर अकाल भेले अछि । विमलजी कहथि, से नहि होयत, भादव अपन कमाल देखाओत आ जजात कोनहुना बचाइये देत । करिया कक्का चुप्पी लधने रहथि । अन्तमे हुनके निर्णायक टिप्पणी देबाक आग्रह भेलनि । ओ पलटी मारैत बजलाह – 'एहि विज्ञानपर कोनो घाघे किछु कहताह, हम तँ दोसरे मौसम विज्ञान देखि रहल छी आइ काल्हि जे 'अण्डरकरेन्ट' चारूभर अपन चमत्कार देखा रहल अछि ।'

विमलजी बच्चा बाबूसँ तमाकूक डिब्बी मँगैत बजलाह–ई कोन विज्ञान अछि कक्का ?'

करिया कक्का मुस्काइत बजलाह–'पुरस्कार विज्ञान । ई जुलाइसँ दिसम्बर धरि पीड़ित कयने रहैत अछि अपन इलाकाक लेखक-साहित्यकारकेँ जकर भोग भोगैत रहैत अछि विद्यार्थी आ पाठक वर्ग । संस्था सभ अलगे लंगोचंगो भऽ जाइत अछि तेँ एखन अकाल वा विकालपर चर्चे व्यर्थ थिक ।'

बच्चा बाबू जे कम सुनबा लेल आ निरंतर बजबा लेल विख्यात छथि सेहो करिया कक्काक एक–एक टा अक्षरकेँ पीबैत जोर–जोरसँ बाजि उठलाह – 'अकाल अथवा वर्षा अपन जागहपर छैक, प्रत्येक वर्ष किछु ने किछु होइते छैक मुदा पुरस्कार जेँ कि एकाधे गोटे केँ भेटैत छैक तेँ एहि विज्ञानपर जतेक मंथन होअय से उचिते अछि । ओना हम एहि सभसँ फराके रहैत छी । हँ, एक बेर एकर फार्मूला हाथ लागल छल मुदा मेघडम्बरा लेनहि चाननघन गाछीमे तेना ने खसलहुँ जे फार्मूला बिसरा गेलहुँ । तहियासँ एहि सभसँ निवृत्त भऽ निनाद कऽ रहल छी से अहाँ सभकेँ बुझले अछि ।'

योगानन्द चुटकी लैत बजलाह – 'अहाँ डाक्टर साहेबसँ पोथी

विमोचन करेबै आ मिश्रटोलाक श्रीमान् आ हुनकर ओझाजीक वर्चस्व स्वीकार नहि करबैक तँ गाछसँ सेव नीचे मुँहे किए खसैत छैक से कोना बुझबै ।' बच्चा बाबू 'की कहलहुँ, की कहलहुँ' बजैत हुनका दिस कान बढ़ौलनि । मुदा बीच्चहिमे टपकैत विमलजी बजलाह – 'यौ बच्चा बाबू पुरस्कार विज्ञान बुझबा लेल पत्रिका सभमे पूज्यनीय, माननीय, आदरणीय सम्बोधनयुक्त लेख लिखय पड़त, ताकि–ताकि कऽ अक्षर कट्टूसँ विद्वान धरिकेँ पोथी देबऽ पड़त आ तकर बाद मोबाइली क्रियासँ सभकेँ सोहराबऽ पड़त । ग्रियर्सनावतार जकाँ विद्यापति पुरस्कार लेल पाहुनक ठेहुन ससारय पड़त ।'

करिया कक्का विमलजीकेँ डपटैत बजलाह – 'की विमलजी अहाँ अर्र–दर्र बजने जा रहल छी । अहीँक इलाकाक एकटा साहित्यकार दर्जनो पोथी छपा बौअयलाह आ अन्तमे गाम धऽ लेलनि । तहिना फेर एकटा लेखक किताब छपा–छपा पुरस्कार पयबा लेल कोचिंगक पम्पलेट जकाँ हरही–सुरही सभकेँ पोथी पहुँचा रहल छथि तैयो अहाँ ई सभ बाजि रहल छी । अहाँ जनैत नहि छी जे हमर प्राध्यापक-साहित्यकार जे एहि दौरमे रहैत छथि से नाम नहि आम पयबा लेल पोथी लिखैत छथि जखन कि ओहि पोथीमे ने रस रहैत अछि आ ने गुद्दे । तेँ ओहिपर माछियो ने बैसैत अछि पाठकक तँ बाते जाय दियऽ ।' करिया कक्का कने रुकलाह आ फेर निर्णायक स्वरमे बजलाह – तेँ हमर विचार ई जे जे एहि मौसमक लाभ उठबय चाहैत छथि से वीणा–वादनक अभ्यासक संगहि 'इदं रसे, इदं गुद्दे'क सम्बोधनसँ मिश्रजी आ ओझाजीकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास करथु, हुनका हाथमे पुरस्कार रुपी आंठी अवश्य अओतनि ।'

करिया कक्का मौसम विज्ञानक फलाफल एकटा सफल ज्योतिष जकाँ रखैत सभक मुँह बन्द कऽ स्वयं सेहो चुप भऽ गेलाह । बच्चा बाबू किछु नहि सुनि सकबाक कारणे सभक मुँह दिस तकैत 'माता तोँही जनिहऽ' उच्छवासक संग हाफी लेबऽ लगलाह ।

28.8.2014



ठीकापर इमान

गामक सड़क बनि रहल छल । फेकूकेँ ओकर ठीका भेटल छलैक । करिया कक्का काजक ढ़ंग देखि बेस नाखुश छलाह । गामक लोक सेहो जेना-तेना बनि रहल सड़ककेँ देखि कुपित छल । पदारथ कक्का लग आबि शिकाइत कयलक जे अहाँ किएक चुप बैसल छी किछुओ तँ करियौक ।

करिया कक्का एक्के बेर बुमकार छोड़ैत बजलाह – 'के कहने छलऽ चुनावक समयमे ठीका लऽ कऽ वोट दियाबक भार लेबऽ लेल । बुझहक आब ठीकाक महत्व ।'

पदारथ बाजल – 'ई कोनो बात भेलैक कक्का ! सड़कक ठीका आ वोटक ठीका दुनूमे कोनो मिलान छैक जे अहाँ एना तमतमा उठलहुँ ।'

– 'हौ, हम तोरापर किएक खिसियबह । हम तँ अपन सामाजिक व्यवस्थापर कुपित छी जे सामाजिक काजक नामपर लोक आब खाली स्वार्थक खेल खेलाइए । चुनावक समयमे तोँ एक पाटीकेँ भोट दिअयबाक भार लेलह तँ फेकू दोसर पाटीक । फेकूक पाटी जीत गेलह आ आब ओ सड़क बनयबाक हेतु ठीकेदार बनि गेल ।' करिया कक्का बजलाह ।

पदारथ तुनकैत बाजल – 'फेकू पेशेवर ठीकेदार नहि अछि तखन ओकरा ठीका किएक भेटलैक ! ओकरासँ नीक सड़क बनाओल हेतै ?'

– 'सड़क नीक बनाओल हेतै की बेजाय ताहिसँ फेकूकेँ कोन मतलब छैक । फेकूकेँ ओहि काजसँ लाभ होउक ताहि टासँ

ओकरा मतलब छैक । आब जेँ कि लाभ सड़के बनौलासँ होयतैक तेँ ओ सड़क बनबा रहल अछि ।'

कक्का सपाट सन जबाव देलनि ।

– 'तँ एकर मतलब ई भेल जे गामक सड़कपर लाखोक खर्च होअय आ ओ कोनो काजक नहि रहय आ से हमसभ टुकुर-टुकुर देखैत रहू ।' पदारथ जोर-जोरसँ बाजल ।

करिया कक्का आर जोरसँ बाजि उठलाह – 'हौ, ठीका लेबऽ आ देबऽ लेल आब लोक अपन इमान बेचैए, काज थोड़बे देखैए से चाहे राजनीतिक मैदान होअय आ कि साहित्यिक-सामाजिक संस्थान होअय, सभठाम एक्के खेला । तोँही कहह देश आकि प्रदेशक सर्वोच्च शिखरपर जे नेता सभ बैसल राजकाज चला रहल छथुन से कि सभसँ नीक विद्वान, प्रशासक, समाजविज्ञानी आ कि अनुभवी छथुन तेँ गद्दी भेटि गेलनि आकि तोरे सन-सन ठीकेदारक किरदानीपर ओतऽ गेलथुन । समाजसेवी कतहु ठीकेदार होअय, ठीकेदार अपन लाभ देखत की समाजसेवा करत !'

करिया कक्का कने रुकलाह आ फेर बाजि उठलाह – जाहि देशक समाजसेवी नेता शपथ ई लिअय जे हम जाति, सम्प्रदाय आ लिंगमे भेद नहि करब, कोनो एहन काज नहि करब जाहिसँ समाजक अहित होअय आ दोसर दिस ओ स्वयं अपन दरमाहा, भत्ता एवं अन्य सुविधा पयबाक हेतु कानून बनयबाक अधिकारी होअय ततऽ जँ एकटा अनुभवहीन व्यक्ति सड़क बनाबय, तोरा सन लोक वोटक ठीका लिअय तँ आश्चर्य नहि होयबाक चाही अपितु 'अन्हेर नगरी चौपट राजा'क धुनपर निर्गुण गयबाक चाही।'

ई कहैत करिया कक्का चुप भऽ गेलाह आ पदारथ सेहो मुँह विधुआ कऽ ओतऽसँ विदा भऽ गेल ।

25.9.2014

●●●

चुट्टी-पिपड़ीक मोल !

दशमीक परात करिया कक्का मुँह-हाथ धो कऽ बहरघरामे बैसल छलाह कि पदारथ ओतऽ पहुँचिते कहलकनि -

— 'सुनलियै की नहि कक्का रावण-वधमे भेल दर्शक-वधक समाचार !'

— 'हँ हौ सुनलियै रातियेमे सभटा खेरहा टी.वी. पर । मुदा ई कोनो नव बात तँ नहि भेलैए जकरा लेल चिन्तित भेल जाय । जतऽ हाकिम-हुक्काम, नेता-अभिनेता रावण-वध समारोहक फीता काटय ततऽ गोटेक-सय चुट्टी-पिपड़ी दबा-पिचा कऽ मरि जाय तँ कोन आश्चर्य । मनुक एहि सन्तान सभ लेल 'मनु महाराज' किएक किछु व्यवस्था करितथि आ किएक जिलाधीश अपन बेटाक जन्मदिनक जलसाक इन्तजामकेँ विथुत कऽ एतऽ कसरत करितथि ।' कक्का गंभीरे बनल एतेरास बात पदारथकेँ कहि सुनौलथिन ।

पदारथ रोष प्रकट करैत बाजल- 'चौंतीस आदमी मरि गेलैक, सैकड़ो आहत भेलैक, दर्जनों लोक निपत्ता छैक आ अहाँ कहैत छिऐक जे चुट्टी-पिपड़ी मरि गेलैक तँ कोन आश्चर्य । की सामान्य लोकक कोनो मोल नहि ।'

करिया कक्का आर गंभीर होइत बजलाह - 'मोल तँ छैके हौ । तोँ एकटा टेम्पो कीनलह अछि हालेमे दू लाखमे, सैह मोल छह तोहर प्राणक सरकारक किताबमे । भेटि जेतैक एक एकटा टेम्पोक दाम ओहि आहत परिवारकेँ । आर की चाही !'

पदारथ गुम्हरैत बाजल - 'अहाँ एहन सम्वेदनहीन भऽ गेल छी से हमरा नहि बूझल छल । अहाँसँ बाते करब बेकार थिक । चलै छी हम ।'

करिया कक्का ओकरा हाथसँ रुकबाक इशारा करैत कहलथिन - 'हौ पदारथ हमरो तोरे जकाँ हृदय अछि, संवेदना अछि, करुणा अछि, दया अछि मुदा जखन हम सरकारक रूपमे आबि जाइत छी तँ मात्र कानून आ ओकर पालनकेँ अपन दायित्व बुझय लगैत छी । तोँही कहह कतहु एहन कोनो कानून छैक जे सामान्य लोकक सुरक्षा लेल विशेष व्यवस्था कयल जाय । खास कऽ जतऽ प्रदेशक मुखिया उपस्थित रहय तकर सुरक्षा लेल ने सभ व्यवस्था होअय । गांधी मैदानमे हुनकर सुरक्षामे तोरा कनेको कमी बुझयलह से कहह । ओ सुरक्षित रहताह तँ प्रदेश सुरक्षित रहत । पहिने ओ तखन ने जनता । मानि लैह भीड़-भाड़मे दू-तीन दर्जन पिचाइयो गेल तँ कोन बड़का बात भेलैक । आ देखह हुनकर उदारता, तोरा एकटा टेम्पो कीनऽमे सभ गति भऽ गेलह । ओ ओतेक टाका कोना फटाफट दऽ देलथिन । आ हे की करबह जकर जते औरदा रहैत छै ततबे दिन ने एहि पृथ्वी पर रहतैक ।'

— 'देखू कक्का आब अहाँ भसिया गेल छी । की-कहाँ बाजय लगलहुँ अछि ।' पदारथ सपाट स्वरमे बाजल ।

— 'हौ हम किएक भसिआयब । अपन प्रदेशक मुखिया की कहलथुन से सुनलह की नहि-'एहन-एहन घटना फेरो भऽ सकैत अछि' तकर मतलब की ओहो भसिया गेल छथि । हौ, ने हम भसिआयल छी, ने ओ भसिआयल छथि, धरतीक जनसंख्या कम करबा लेल हमर धरती माता बुझह जे भसिया गेल छथि जे एहन घटना, एहन सोच, एहन व्यवस्था हमरा सभ कऽ लैत छी जे एहन-एहन समाचार सुनबा लेल विवश होइत छी ।'

ई कहैत करिया कक्का अपन टामन गुड़ियामे लागि गेलाह आ पदारथ सेहो उदास मोने ओतऽसँ विदा भऽ गेल ।

9.10.2014

●●●

अन-धन लक्ष्मी घर आउ

करिया कक्का हाथमे झाड़ू लऽ कऽ चहुँदिस भांजि रहल छलाह आ स्वतः संभाषणमे लागल छलाह - 'जँ झाड़ू लगा कऽ देशक राजधानीक मुख्यमंत्री बनल जा सकैत अछि, देशक मुखिया स्वच्छता अभियानमे झाड़ूकेँ अस्त्र-शस्त्र जकाँ प्रयोग कऽ कल्याणकारी योजनाकेँ बहाड़ि कऽ साफ कऽ सकैत छथि तँ किएक नहि एहि झाड़ू बलें झोल-झक्करकेँ झाड़बाक संगहि 'अन धन लक्ष्मी घर आउ'क नारा लगबैत हमहूँ अपन भाग्योदयक द्वारि साफ कऽ ली।'

पदारथ करिया कक्का दलान पर पहुँचैत हुनक संभाषण सुनि चिहुँकि उठल। ओकरा छगुन्ता लागि रहल छलैक जे ओ झाड़ू लऽ कऽ एना किएक कऽ रहल छथि। ओ कक्काकेँ टोकैत बाजल - 'की यौ कक्का, झाड़ू लऽ कऽ किएक एना कूदफान कऽ रहल छी?'

— 'तों की बुझबहक झाड़ूक महत्ता, देखैत नहि छह देशमे एखन झाड़ूक चमत्कार। जेम्हरे देखबह तेम्हरे एकसँ एक डिग्गा झाड़ू लगयबा लेल आफन तोड़ने अछि। की नेता की अभिनेता, की अफसर की समाजसेवी सभ झाड़ू लऽ बहारि रहल अछि। खाली तोरे सन निठ्ल्लाकेँ देखैत छी जे बाढ़निक भयसँ घर छोड़ने रहैत अछि।'

— 'हमर छोड़ू कक्का। अहाँकेँ बुझले नहि अछि जे जतेक आजुक झाड़ूबाज मैदानमे छथि से झाड़ुये खा कऽ झाड़ू मारबाक अर्थ बुझलनि अछि तेँ ओकरा पजिअयबाक लेल आफन तोड़ने छथि।'

— 'हौ तोहर कहबाक आशय यैह ने जे ओ लोकनि बाढ़नि प्रूफ छथि तेँ ओकर असरि आब लोकोपर पड़ैक तकर व्योंतमे लागल छथि। छैक ने यैह बात!'

— 'छैक किछु एहने सन मुदा......।'

— 'मुदा की, मुदा-तुदा छोड़ऽ एहि झाड़ूक अभियानसँ की सभ लाभ लोकके भेलैक से सुनह। प्राणरक्षक औषधिक मूल्य नियंत्रण कानून कचराक-ढ़ेरपर, रेलवे टिकटक नीलामीसँ साधारण लोक प्लेटफार्मसँ बाहर, बाजारपर सरकारक नहि कम्पनी सभक नियंत्रण, करिया धन अन्हारेमे रखबाक स्वीकृति आ...।

— 'छोड़ू-छोड़ू कक्का सफाई अभियानक ई अलाप। आगाँ सूनब तँ हम अहाँक झाड़ू छीनि अपने कपार फोड़ि लेब। जकरा जेना मोन होइ, जतऽ मोन होइ लगबऽ दियौ झाड़ू। सभ साफे करबा लेल अबैत अछि। भने कचरासँ पड़ोसीक घर पाटि दीअय। मुदा एना नहि करू जे ने रातिमे निन्न होअय आ ने दिनमे चैन।'

— 'हौ, हम ने तोरा बजबऽ गेलिअऽ आ ने एहि सफाई अभियानमे संग देबऽ कहलियऽ। हम तँ मात्र एहि प्रकाश-पर्व दीपावलीमे अपन घरमे अन्न-धन भरबा लेल आ चोर बइमानकेँ निकाल-बाहर करबा लेल झाड़ू भांजि रहल छलहुँ कि बीच्चेमे आबि तोँ हमर एकाग्रता भंग कऽ देलह। की हम एहने-एहने बाधा केँ सोझाँमे आबऽ देबऽ लेल बहुमत प्राप्त कऽ गामक आसन सम्हारने छी। बूझि लैह, हमर एहि सफाइ अभियानमे जे क्यो आओत तकरा हरियाणा-महाराष्ट्रक समर जकाँ धूरा फंका कऽ छोड़बै। जाह एतऽसँ तुरत ने तँ तोंहू ओहिना हमर झाड़ूसँ बहरा कऽ कचराक ढेरपर फेका जयबह जेना कतेकोकेँ हमर झाड़ूबाज बहारि कऽ फेकि कऽ रामराजक जोगारमे लागल छथि।'

ई कहैत करिया कक्का फेरसँ झाड़ू भजैत बाजय लगलाह - 'अन धन लक्ष्मी घर आउ, चोर-बइमानकेँ बाहर भगाउ।' करिया कक्काक ई तेवर देखि पदारथ धीरेसँ ओतऽसँ ससरि गेल।

6.11.2014

●●●

उत्सवक उजाहि

पदारथ माथपर पीयर मुरेठा बन्हने भागल जा रहल छल । ओकरा संग दू-तीनटा युवक सेहो ओहने वेशभूषामे ओकर संग लागल छलै । करिया कक्का ओसारापरसँ ओकरा सभके देखलनि तँ हाक देलनि – 'की हौ पदारथ कतहु घटकैतीमे जाइत छह की पीयर-पीयर मुरेठा साजिकऽ ।'

पदारथ मित्रमंडलीक संगहि टुघरैत कक्काक दलानपर अबैत बाजल– 'प्रखंड कार्यालयपर आइ 'वसंतोत्सव'क आयोजन छैक । मंत्रीजी सेहो आबि रहल छथि । बेस रंगारंग कार्यक्रम छैक । अहाँ नहि जयबै ?'

– 'नहि हौ, हम नहि जायब । आब हमरा एहि उत्सव सभसँ उत्साह नहि होइए ।' ओ रुख स्वरमे बजलाह ।

– 'किए कक्का । वसंत पंचमीक आगमनसँ लोकक मोन पुलकित भऽ उठलैक अछि । वसंतक आगमनक स्वागत लेल ई वसंतोत्सवक आयोजन कयल गेल छैक । लगले फगुआ सेहो हुलकी देबा लेल तत्पर अछि । तखन अहाँ किएक मन्हुआयल छी ।' पदारथ उत्कंठासँ कक्काक उदासी जनबाक कारण पूछलक । करिया कक्का पुनः ओहिना बजलाह – 'हौ, हमरा सभ उत्साहक प्रेरक; उमंग लहरीक प्रतीक आ सामंजस्य-सौहार्द-प्रेमक सहचरीके उत्सव बुझैत छिऐक मुदा ई उत्सव तँ राजनीतिसँ प्रेरित अछि, लूटक माध्यम अछि आ सत्य पूछऽ तँ अवसरवादी द्वारा गतानल आयोजन अछि जाहिमे जकरा जेना मोन होइत छैक तेना एहि उत्सवक उपयोग-उपभोग करैत अछि ।'

– 'कक्का अहाँ किएक लोकक उत्साहके एहन नजरिसँ देखैत छिऐक ।' पदारथ फेर प्रश्न कयलक ।

– 'तँ तोरा माने कि जाहि आयोजनमे उत्सव जोड़ि दिऐक ओ उत्सवक माहौल बना देतैक । तोंही कहह ई साहित्योत्सव, पतंगोत्सव, संगीतोत्सव, नृत्योत्सव, प्रज्ञोत्सव आदि-आदिक उजाहि कहियो सुनने छलऽ । पहिने विजयोत्सव मनाओल जाइत छल, तकर बाद जन्मोत्सव आयल, फेर विवाहोत्सव शुरू भऽ गेल आ आब तँ धनोत्सव मनयबाक व्योंतमे महोत्सवक रूपमे आर ने जानि कथी-कथीक नामपर उत्सव मनाओल जायत जाहिमे ने संस्कारक दर्शन होयत आ ने उत्सव आयोजनक परिपाटिये ।'

– 'तँ की ई सभ फजूल छैक सैह ने अहाँ कहय चाहैत छी ।'

– 'फजूल ने तँ की छैक । जाहि आयोजनमे 'उत्सव'क ठेकाने नहि, ततऽ 'शव'क आगाँ जेना लोक झौहरि करैछ तेहने ने ई आयोजन होइत छैक ।'

पदारथ रोसाइत बाजल – 'अहूँ कक्का आब भसिया गेल छी । उत्सवेक बेरमे अनढन गप्प बाजि दैत छिऐक । आब लोक सभ परिस्थितिमे कोनो ने कोनो लाथें उत्सवक आनन्द लैत अछि तँ ताहिमे हर्जे की !'

– 'हौ मिथिलोबासीसँ बेसी क्यो विपरीत स्थितिमे आनन्दोत्सव मनबैत अछि । देखैत छहक की नहि अपना ओतऽ मृत्योत्सव कोना मनाओल जाइछ ! उतरीधारी ई उत्सव मनयबा लेल जमीन-जथा, डीह-डाबर बेचि पीहकारीक संग पन्तुआपर रसगुल्ला परसैत अछि आ हमरालोकनि माछ-मासुक बिसाइन स्वाद लेलाक बादे मृतात्माके 'स्वच्छन्दो भव' कहैत छिऐक । जाह-जाह तोहूँ सभ पिहकारी दऽ वसंतक आत्माके स्वच्छन्द कऽ आबह ने तँ ओहो उत्सवक स्वाद नेने बिनु आमक मज्जरक पेटेंट अपना संगे नेने जयथुन ।'

ई कहैत करिया कक्का अपन कोठरीमे पैसि गेलाह आ पदारथ संगी सभ संगे मुँह विधुऔने ओतऽसँ विदा भऽ गेल ।

28.1.2015

●●●

जनसाधारणक बोर

करिया कक्का रेल भाड़ामे अगिलगौन वृद्धि देखि बेदनायल छलाहे कि लगले आमक एहि मधुर मासमे अमौटक धरिका जकाँ रेल बजट आ आम बजट सोझाँ अयलनि । ओ माहुर भऽ उठ्लाह- एखन लोक विभिन्न प्रकारक आमक स्वाद लेत कि एहन तीत स्वाद जे खोप समेत कबुतराय नमः भऽ जाय । खने ओ अखबार पढ़थि आ खने ओकरा मचोड़ि कऽ फेकि देथि । हुनक ई किरदानी पड़ोसिया योगानन्द देखि रहल छलाह जिनक अक्षमताक कारणे आइकाल्हि बिजलीरानी भकजोगनी जकाँ भुक-भुक करैत रहैत छथि । जखन हुनका नहि रहल गेलनि तँ अपने दलानपरसँ करिया कक्काके सम्बोधित करैत कहलथिन - 'की यौ करिया कक्का, फल्लां सुनरी जेना अपन यारक क्रोध भतारपर उतारैत छैक तहिना अहाँ अपन क्रोध अखबारपर किएक उतारि रहल छी ?'

करिया कक्का फेर अखबारकेँ मचोड़ि कऽ फेकैत बजलाह - 'तँ कि एकरो आम संगे गुरि कऽ खा जाउ वा एकरा गला कऽ अमौटमे मिला एकर अस्तित्वे समाप्त कऽ दियौ जेना सरकार आम बजटमे मिथिलाक अस्तित्वकेँ नकारि देलक अछि ।'

— 'एना किएक कहैत छिऐक कक्का, रेल बजटमे अहाँक मिथिलाकेँ एक गंडा नव-नव जनसाधारण एक्सप्रेस भेटल अछि । आब की, करू ने सैर जयनगर, सहरसा आ दरभंगासँ दिल्ली आ अहमदाबादक । तैयो खिसियायले छी ।' योगानन्द प्रसन्नता व्यक्त करैत बजलाह ।

— 'हँ यौ, अहाँ सभक बोर्ड जकाँ दिमागो आब ठीकेदार जकाँ काज करैत अछि तँ किएक ने प्रसन्न होयब । यौ, दस दिन पहिने ढोढ़ी ढील करयवला भाड़ा बढ़ायब आ तकर बाद जनसाधारण एक्सप्रेस चलाकऽ मिथिलाक लोककेँ भगा कऽ अपना क्षेत्रक

विकास करबा लेल ई बोर देब भने अहाँ नहि बुझियौ मुदा हम देखि रहल छी जे आब तँ हमर सभक खेत-पथार मनुक्ख बिना आर भकोभन्न भऽ जायत । मनुक्ख बिना हमर पान, मखान, माछ आ आम बिलायल जाइए आ अहाँ...।'

करिया कक्काकेँ रोकैत योगानन्द बजलाह - 'लियऽ ने 226 करोड़ टाका आ चालू करू मिथिलाक विकास लेल बहुप्रतीक्षित दीघा-सोनपुर सड़क सह रेल पुल ।'

करिया कक्का आर तमकैत बजलाह - 'यौ योगाबाबू ई सभ टिटकारी नमो-नमोकेँ कहियनु अनका देथिन जनिका खाली लोढ़बाक ज्ञान छनि बिलहबाक नहि । से जँ रहितनि तँ मिथिलो मे कोनो रेल कारखाना आ कि उद्योग-धंधाक व्यवस्था करितथि ने । मुदा से तँ भेलनि नहि आर देखार भऽ गेलाह, अपना लेल बुलेट रेल आ हमरा सभ लेल जनसाधारण दऽ कऽ ।' करिया कक्का कने रुकलाह आ फेर बुमकार छोड़ैत बजलाह - 'हमहूँ सभ आब बड़हियावला सन पाठ पढ़ेबनि नमो-नमोकेँ । जेना ओ लोकनि दूध अपन इलाकासँ बाहर नहि जाय दैत छथि भने रसगुल्ला लऽ जाउ, पेड़ा लऽ जाउ तहिना हमहूँ सभ आब आम आ कि मखान, पान आ कि माछ साबुत बाहर नहि जाय देब । अपन उत्पादकेँ अपने बिकाउ बना बाजार पठायब । ओ आम बजट बनबैत रहथु आममे चोभा नहि मारय देबनि । ओ सभ संसदमे टेबुल पीटैत रहथु मखान फोड़ि कऽ खीर नहि गीड़य देबनि आ मुँहपर जे पहलेजाक पानक लाली छनि से नहि भेटने स्वतः जीहपर ने छल्ली पड़य लगनि तँ हमरा कहब ।'

लम्बा भाषण देलाक बाद करिया कक्का एकाएक अपन मुँहपर ब्रेक मारि देलनि आ पुनः मोचड़लहा अखबार उठा किछु पढ़य लगलाह । योगानन्द सेहो बिजली रानीक चलि जयबाक कारणे गमछा हौंकि अपन देहक पसेना सुखबऽ लगलाह ।

17.7.2014



झरकल मुँह झपनहि नीक

पदारथ करिया कक्काक हाथमे अखबार दैत, एकटा समाचार दिस इंगित करैत पुछलक – 'ई हाईकोर्टक फटकारवला समाचार पढ़लिऐक की नहि !'

करिया कक्का बजलाह – एहि बातपर पहिनहि हमर पूर्वज ठोस बात कहि गेल छथि । पहिने कहलनि-छौंड़ी परिकल ढौआपर', फेर ओहिसँ आगाँ कहलनि 'झरकल मुँह झपनहि नीक' । आब तोरा बुझबामे नहि अबैत छह तँ अखबार पढ़ि-पढ़ि चौंकैत रहह ।'

– 'कक्का अहूँ हद्द करैत छी, एहि समाचारमे कालेजमे हाजिरीक कमीपर छात्रालोकनि द्वारा ओंकर परिपूर्तिक माँग कयल गेल छैक आ माननीय कोर्ट –'मुँहपर ओढ़नी बान्हि कऽ चलब आ पार्के-पार्क घुमबाक बात कहि कान बात नहि देलक । ई तँ उचित नहि ने भेलै ।' पदारथ बाजल ।

– 'तँ की कोर्ट की कहौ जे अहाँलोकनि स्वतंत्रताक लाभ लैत सवारी सभपर दिनादानिस नुमाइंस करैत रहू आ लोके आँखि फेरि लिअय । आ की कोर्ट कहौक जे घरसँ निकललि ई पढ़ुआ मैडमलोकनि, जे मुँह झाँपि सगरे सैर करैत फिरैत छथि, तनिकर हाजिरी लेबा लेल शिक्षिकालोकनिकेँ पार्क, सिनेमाहॉल वा बाजार प्रांगणक गेटपर तैनाती कयल जाय ।'

– 'कक्का अहाँ कोनो बातपर एकदिसाहे किए बाजय लगैत छिऐ ?'

– 'हौ, हम किएक एकभग्गू होयब, जखन तोहर सरकारे कहैत छैक जे अठारह वर्षसँ पहिने विवाह नहि होयबाक चाही आ दोसर दिस अठारहमे वर्षमे ओकरा फोटो पहचान-पत्र दऽ दैत

छैक तँ एहिमे की माय-बाप करतैक आ की हम-तोँ करबह । बालिग जे करय से ओकर अधिकार ।'

– 'एकर माने कोर्ट जे कयलक सैह ठीक ।' पदारथ पुनः बाजल ।

– 'देखऽ पदारथ कोर्ट आब सेहो पाक-साफ रहि झंझटमे नहि पड़य चाहैत अछि । सरकार से प्रतिदिन रोजगार देबाक बात कहैत छैक । तेँ जँ पार्क, सिनेमा आ कि बाजार प्रांगणमे 'मैथिली सेवी' जकाँ ककरो अंशकालिक चाकरी भेटि जाइत छैक तँ ताहिमे हर्जे की ! हमरा तँ एहीमे प्रसन्नता होइत अछि जे एखनो लोकमे लाज-धाख बाँचल छैक तेँ ने मुँह झाँपि चलैत अछि आ 'झरकल मुँह झपनहि नीक' मैथिलीक लोकोक्तिकेँ जियौने अछि ।'

ई कहैत करिया कक्का गुम्म भऽ गेलाह आ पदारथ सेहो चुपेचाप दोसर समाचार पढ़य लागल ।

16.4.2016



मिलन-मिलानक सेन्हमारी

करिया कक्का बाध दिससँ घुमि-फिरि कऽ अयलाह आ लागि गेलाह अपन टामनगुरियामे । पहिने तरकारी काटि लेलनि आ फेर आटा सनलनि । ई दुनू काज समाप्त कऽ तरकारी छौंकिये रहल छलाह कि फेकू हुलकी दैत टोकारा देलकनि ।

– 'की कक्का आब भानसो करय लगलिऐ ।' करिया कक्का तरकारी लाड़ैत बजलाह-'तँ ऐमे तोंरा अजगूत किए लगलह । एहि सेन्हमारी युगमे यैह सभ तँ हेतै । अप्पन काज सम्हरतै नहि आ दोसरक काजमे मुड़ियारी देतै ।'

– 'की कहलिऐ सेन्हमारी, भानस, करब सेन्हमारी कोना भेलै ? जखन जेहन तखन तेहन ।'

करिया कक्का फेकूकेँ बीच्चेमे रोकैत कहलथिन- 'तोँ सभ बुझबहक किछु नहि आ बाजय लगबऽ इतिहास-पुरानक गप्प । हौ, हम की सखसँ भनसाघर धयने छी । काकी बुढ़ारीमे स्कूल धयलथुन, मुनटुनियां साइकिल लेल हुलकर पछोड़ धऽ लेलकनि । एहि स्थितिमे के डेबतै ई चूल्हा-चौकी। हारि कऽ चकलापर बेलना गुड़कबैत छी आ लोहियामे छोलनी चला लोहतरंग बजबैत छी ।'

– 'माने ई भेल कक्का जे मजबूरीमे अहाँकेँ ई काज करय पड़ि रहल अछि ।'

– 'हँ हौ, भेल तँ सैह मुदा आब हम मजा लऽ रहल छी एहि काजमे । देखिहऽ जेना भनसिया भऽ कऽ संजीव कपूर राजकपूर जकाँ नाम कमा लेलक, जेना जवाहर झा भनसिया

भऽ कऽ जवाहर रत्नक स्मरण करबैत छथि तहिना हमहूँ सौंसे परोपट्टामे चौकाचार्य बनि कऽ तोहर काकीकेँ नहि देखा देलियनि तँ कहिहऽ । हौ, जखन नेता सभ मिलन-समारोहक आयोजन सँ मातवर कहाइत अछि 'दलबदलू' नहि तँ किएक ने तेल-मसल्लाक मिलान करा हमहूँ चौकाचार्य बनि आधा आबादी केँ ललकारी ।'

– 'तँ अहाँ यैह ने कहय चाहैत छी जे पुरुष आब भनसाधर धरय आ जनीजाति स्कूल-कार्यालय चलाबय ।'- फेकू कक्कासँ प्रश्न कयलक ।

कक्का ओकर गप्प लोकैत बजलाह – 'जनीजाति भोरे भोर तैयार भऽ घरसँ बहरा जाय तँ घर के सम्हारतै, धीया-पूता के देखतै, चूल्हा-चौका के डेबतै ? पुरुखे ने ।'

– कक्का आखिर ई सेन्हमारी, ई अफरातफरी किएक छै ?-फेकू फेर प्रश्न कयलक ।

– हौ, कारण बहुत रास छैक मुदा आजुक युगमे राजनीतिक दलक ककोड़बाबियान, असीमित सुविधापर बकध्यान आ घरे-घर सेन्ह कटबा लेल मोबाइलक ओरिआओन प्रमुख कारण छैक ।' कक्का तरकारीमे पानि ढारैत बजलाह ।

– 'कक्का, एहि स्थितिमे अहाँ युवा पीढ़ीकेँ की संदेश देबऽ चाहबै ।'

– 'युवक वर्ग आजुक युवती जकाँ छाती तानि अपन कर्त्तव्य पथपर अग्रसर होअय आ युवती लोकनि युवक जकाँ सर्वांग वस्त्र धारण कऽ भारतीय संस्कृतिक रक्षा करथु तखने ई मिलन आ मिलानक सेन्हमारी रुकि सकत ।'

ई कहैत करिया कक्का लोहियामे पड़ल तरकारीकेँ छिपलीसँ झाँपि देलनि आ छोलनिकेँ त्रिशूल जकाँ हाथमे नचबऽ लगलाह ।

06-03-2014

●●●

पानि पिअयबाक परम्परा

देशक महाचुनावमे सत्ताधरी संगठनक भारी पराजय आ प्रदेश सरकारमे परिवर्तन भेलासँ सर्वत्र गप्प गोष्ठी चलि रहल छल । देशमे पहिल बेर कोनो दोसर दल पूर्ण बहुमत प्राप्त कऽ सरकार बना लेलक ताहूपर बेस घमर्थन भऽ रहल छल । मुदा करिया कक्का एहि सभसँ दूर निचैन छलाह । कोनो प्रतिक्रिया नहि । हिनक एहि चुप्पीपर गामक लोक आश्चर्यचकित छल । पदारथ आ फेकूके॑ नहि रहल गेलैक । ओ दुनू कक्काक दलानपर पहुँचल आ हाक लगौलक-'कक्का छी यौ ।'

करिया कक्का बहरघरेसँ बजलाह- 'सोझे भितरे चल आबह ।'

पदारथ फेकू संग प्रवेश करैत बाजल-'की बात छै कक्का, देश आ प्रदेशमे एतेक पैघ परिवर्तन भऽ गेलै आ अपने चुप्पी लधने छी, की बात ?'

— 'तँ की हमहूँ उधिआय लागू । 'कक्का रुकैत पुनः बजलाह- 'एकटा पेशेवर समूह अपन पेशा चमका लेलक आ पुरना पछड़ि गेल तँ हम किएक अपस्याँत होउ । हौ, जे मेहनति कयलक, टाका बुकलक से जीतल आ जे शासन-प्रशासनके॑ अपन बपौती बुझलक से रसातल गेल ।'

फेकू बाजल-'एना किएक बजैत छी कक्का, पेशाक कोन बात छैक । देशक बात छैक, देशक सरकारक बात छैक, जनताक कल्याणक बात छैक ।'

कक्का कड़कैत बजलाह- 'देशक कल्याण आ जनताक कल्याणक बात करैत छह हौ, जँ यैह बात रहितैक तँ प्रचार तंत्रपर अरबो

टाका एना बहाओल, जाइत ! की हमहूँ गामक कल्याण लेल गामक धन बुकैत छी ।'

पदारथ कक्काके॑ रोकैत बाजल- 'जखन लोकतंत्र छैक तखन एते तँ हमरा सभके॑ बर्दाश्त करैए पड़त । साधु बनि राजनीति नहिये कयल जा सकैछ ने ।'

— 'हौ, छोड़ऽ ई सभ । लोकतंत्र-लोकतंत्र सुनैत कान पाकि गेल। सोझे किएक ने मानि लैत छह जे ठाम-ठाम खोपतंत्र भेल जा रहल छह पूरा देशमे । ते॑ ने कतहु माय-बेटा, कतहु बाप-बेटा-पुतहु, कतहु बाप-बेटा आ भाइ, कतहु पति-पत्नी एहू संग्राममे तोरा सभके॑ मोहिये लेलकऽ । एकटा मखौलिया परिवार हारलह एहि कारणे जे ओ ट्वीट करब, मैसेज करब आ चैटिंग नहि कऽ कठपुतरीक डोर पर नचबैत रहलह अपन पत्नी आ बेटीके॑ ।'

फेकू कक्काके॑ रोकैत बाजल- 'कक्का अहाँ एहि परिवर्तनके॑ कोन रूपमे मानबैक सैह कहू ।'

— 'हौ, एकटा पुरान पेशेवर मदारी दलक खेल पुरान भऽ गेलै ते॑ मोन बदलऽ लेल लोक दोसर पेशेवर मदारीक दलके॑ गद्दी पर बैसौलक अछि ।' कक्का ई बाजि चुप भऽ गेलाह ।

पदारथ कक्काके॑ पटरी पर अनबाक प्रयत्न करैत अन्तिम प्रश्न कयलक-'अहाँ देशमे परिवर्तन भेलैक से कोना मानबैक ?'

कक्का दीर्घ सांस लैत बजलाह- 'हौ तोहर देशमे 10 टकामे एक पाउच दारु बिकाइत छह आ 15 टकामे एक बोतल पेयजल । तोहर जे नवका देशक नेता भेलथुन अछि से सिंघासन पर जायसँ पहिने गंगाक आरती कयलथुन आ संसदमे जायसँ पहिने संसद भवनके॑ साष्टांग कयलथुन ताहिसँ बुझाइत अछि जे देशक गरिमा आ परम्पराके॑ चिन्हैत-जनैत

छ्थुन । तेँ हुनकासँ सभसँ पहिल अपेक्षा ई अछि जे सम्पूर्ण देशमे जँ पेयजल उपलब्ध करा मंगनीमे पानि पिअयबाक जे परम्परा छल तकरा कायम कऽ देथुन तँ बूझब जे कोनो समाजसेवी सरकार आयल अछि ने तँ बूझब जे अरबो टाका खर्च कऽ कोनो पेशेवर दल हमरा सभके पानिये पियाबऽ टा लेल आयल अछि, परिवर्तन करय लेल नहि ।'

ई कहैत कक्का तेना चुप भऽ गेलाह जेना ओहिठाम कोनो गप्पक लारचार भेले नहि हो । कक्काकेँ ओहि अवस्थामे छोड़ि फेकू आ पदारथ बहरघरासँ धीरेसँ निकलि गेल ।

05-06-2014



मुक्तिक मार्ग

भोरे भोर अखबार आयल तँ करिया कक्का हपसि कऽ लेलनि आ बेरा-बेरी समाचार देखय लगलाह । अखबार चुनावी मसल्लासँ रंगल छल । एकटा समाचार पढ़ितहिँ गंभीर भऽ गेलाह । अखबार सोझाँमे रहनि मुदा ओ चिन्तन-तन्द्रामे छलाह ।

— 'की भेल कक्का, अखबार सोझाँमे अछि आ अहाँ आँखि मुनने चिन्तामग्न छी ।' पदारथ दलान पर अबैत बाजल ।

— 'हँ हौ, हम ठीके चिन्तामे पड़ल छी जे आखिर राजनीतिकेँ कोन व्याधि धऽ लेलकैक अछि ।'

— राजनीतिकेँ व्याधि नहि धयलकैक अछि कक्का, आब तँ ओ आर भकरार भऽ कऽ अपन रूपमे आबि रहल अछि । देखैत नहि छिऐक एकसँ एक दिग्गज फिल्मी हीरो, वैज्ञानिक, खेलाड़ी, डाक्टर, उद्योगपति जे लोकप्रियताक संगहि यश-प्रतिष्ठा आ धन पाबि महोमहो भऽ गेलाह सेहो आब राजनीतिक मैदानमे छड़पान दऽ रहल छथि ।'

— 'हँ हौ, हम सभ देखि रहल छी, आखिर मोक्ष पयबा लेल सभ द्वारिक तँ माटि चाहबे ने करी ।' -'कक्का गंभीर भऽ कऽ बजलाह ।

— 'सभ द्वारिक माटिक बात नहि बुझलिऐक कक्का ।' पदारथ कक्का दिस तकैत बाजल ।

— 'हौ, साबिकमे जखन सभ सुख भोगि लोक मोक्ष पयबा लेल अनेक द्वारिपर जा मुक्तिक कामना करय ताहिमे एकटा द्वारि वेश्याक सेहो होइक ।'

— 'वेश्याक द्वारि, मोक्ष लेल वेश्याक द्वारिक की आवश्यकता.....।' पदारथ पुछलक ।

— 'छलैक हौ छलैक । ताहि जमानामे ओकर द्वारिकेँ सभसँ निरधिन मानल जाइत छलैक मुदा ओ देहक सौदा कइयो कऽ एकटा मर्यादाक निर्वाह करैक । अपना गाहकक नीक चाहैक तेँ ओकर द्वारिकेँ पीठ मानल जाइक । मुदा ओहो समाप्त भऽ गेलैक ।'

— 'की कहलिऐ कक्का, वेश्याक पीठ समाप्त भऽ गेलैक ?'

— 'तँ तोरा माने की राखले छैक । आब तँ रस्ते-पयरे देह बिकाइत छैक । चलती मोटरसाइकिल पर धरि फेबिकालक प्रचारकेँ धिक्कारैत युवा-युवतीकेँ सटैर कयने देखबह । सभठाम ई व्यापार ओहिना फलि-फुलि रहल अछि जेना ई राजनीति चतरल जा रहल अछि । कक्का बजलाह ।

— 'तँ अहाँक कहबाक तात्पर्य ई जे ई महानुभाव लोकनि सभ किछु प्राप्त करबाक बाद वेश्याक द्वारिपर नहि राजनीतिक द्वारिसँ अपन मोक्षक मार्ग प्रशस्त करय चाहैत छथि, सैह ने !' पदारथ बाजल ।

— 'जे व्यक्ति अपन यश-कीर्ति, लोकप्रियता, धन राशिसँ तृप्ति नहि पाबि सकल, गंगा-कमला आ कुंभ स्नानसँ पाक साफ नहि भऽ सकल तकरा राजनीति सदृश द्वारिये ने मुक्ति दिया सकैत छैक जतऽ झूठकेँ झूठ नहि आ सत्यकेँ सत्य नहि मानल जाइछ । आश्वासनकेँ रसगुल्ला जकाँ गुड़का कऽ जनताकेँ ओहिपर भनभनेबा लेल छोड़ि देल जाइछ । एहूसँ कोनो निरधिन द्वारि भेट्टैक की मोक्ष लेल !'

ई कहैत कक्का पुनः अखबार पढ़यमे तल्लीन भऽ गेलाह । पदारथ हुनकर कहल बातक अर्थ लगबऽमे ओझरा गेल ।

10-01-2014



करिया कक्काक साक्षात्कार

करिया कक्का आइ पूरा मूड़मे छलाह । कारण ई छलैक जे आइ एकटा चैनेलवला रिपोर्टर हुनकर साक्षात्कार लेबा लेल जे ने घड़ी पहुँचयवला छलनि । ओ खूब बनि-ठनि कऽ बैसल छलाह अपन बहरघरामे । ठीके ओ चैनलबला एकटा मोटरकारसँ सदलबल पहुँचल आ करियाकक्काक मुँह लग माइक सटबैत पूछि बैसल-

— 'अपने अपनाकेँ शीर्षस्थ आन्दोलनी, भाषाविद्, भाषानेता आ साहित्यकार कोना मानैत छी जखन कि अपनेक अनेक समकालीनक श्रेष्ठ कृति छनि, भाषा आन्दोलनमे सेहो अनेक गोटे बेस काज कयने छथि ?'

— 'जे कयलनि से कयलनि, जे पृथ्वी पर छथिहे नहि तनिकर लेखे की ? जीवित जतेक गोटे छथि तनिका सभसँ जेठ हम छियनि तखन अपनेकेँ हमर शीर्षस्थ होयबामे शंका किएक अछि !'

— 'अपनेपर आरोप अछि जे अपने जाहि-जाहि संस्थामे गेलिऐक ताहिठाम वंशवादकेँ प्रोत्साहित कयलिऐक । अपन पुत्र, जमाय, नाति एतेक धरि जे भातिज, समधि आदि संबंधीकेँ ठाढ़ कऽ एकटा एहन गोल बना लेलिऐक अछि जे ककरो चलहे ने दैत छिऐक ! की ई सभ सत्य अछि ?

— 'करिया कक्का विहुँसैत उत्तर देलनि -'के अपन सखा-सन्तान लेल नहि करैत अछि । अहाँ जनैत छी जे हमरा सभकेँ आगाँ बढ़बाक प्रेरणा देशक राजनीतिसँ भेटैत अछि । हमर देशक राजनीति ई देखा देलक अछि जे मैदानमे ठबाक हो तँ वंशवादक संगहि भाइ-भतिजावाद, जातिवाद करु ।' ओ कने रुकैत पुनः बजलाह- 'एहि प्रकारक प्रश्ने आजुक लेल अनर्गल अछि । किछु तेहेन बात पूछू जे लागय अहाँ हमरा पर केन्द्रित छी।'

— 'अपनेकेँ लोक करिया कक्का किएक कहैत अछि ?'

– 'कारी पर कोनो रंग नहि चढ़ैत छैक तेँ ।'

– 'अच्छा ई कहल जाय जे समाजमे – साहित्यमे अपने प्रतिष्ठित ओ चर्चित भेलिऐक कोना ?

– देखू, मिथिलाक लोक विनोदी प्रवृत्तिक मुदा साधनहीन । हम एहन लोकक मोनमे 'गुदगुद्दी' लगयबाक हेतु अल्हुआ (स्वीट पोटेटो) केँ माध्यम बनौलहुँ आ साहित्यिक बजारमे ओकर माहात्म्यकेँ देखौलिऐक । साधनहीन लोक अपन मूलाहारक वर्णन सुनि महोमहो भऽ उठल आ हम सेहो ओही प्रसादेँ चर्चित-प्रशंसित ओ स्थापित भऽ गेलहुँ । ओना कहियो काल कोनो कौआ लोल मारि दैत अछि तँ छिलमिला जाइत छी ।' करिया कक्का ई बजैत-बजैत कनेक रोषमे आबि जाइत छथि ।

– 'कौआ लोल मारि दैत अछि से नहि बुझबामे आयल, कने एकरा फरिछाओल जाय ।'

– 'देखू राजनीतिक नेता जखन अपन मिशनमे लगैत अछि ताहि बीच जँ क्यो ओकर पत्नी, प्रेमिका अथवा कोनो एहने सन कमजोर नसपर हाथ दऽ कोनो अनटोटल बात हवामे छोड़ि दैत अछि तकरा कौआक लोल मारब कहल जाइत अछि । किछु बात तँ झाँपलो-तोपल रहबाक चाही ने, तखन ने राजनीति करबामे मजा अबैत छैक ।'

– एकर मतलब ई भेल जे अपनेक सफलतामे अनेक झाँपल-तोपल बात अछि जे अपनेकेँ शतायु होयबाक आशसँ जोड़ने अछि । एहि पर किछु कहबैक !'

– 'परमुण्डे फलाहार प्रथम मंत्र, लज्जाक तिरस्कार दोसर मंत्र, वंशवाद-संबंधवादक अंगीकार तेसर मंत्र आ अवसरवाद ब्रह्मास्त्र ।' करिया कक्का रिपोर्टरक कानमे अंतिम उत्तर प्रसारित नहि करबाक आग्रह करैत फ्रीज भऽ गेलाह । चैनलवला सभ हुनका धन्यवाद दैत अपन असला-खसला समेटि विदा भऽ गेल ।

1-5-2014



करिया कक्काक कोरामिन

अकालक कारणे खेतीक मारल जायब, ऋण आपसीक जोरगर तगादा आ दिन-प्रतिदिनक खर्च नहि जुटा सकबाक कारणे पदारथ बेस चिन्तित छल । ताहिपरसँ नित्य प्रति कृषकक आत्महत्याक खबरि सुनि-सुनि ओ जेना अवसादपूर्ण अवस्था दिस अग्रसर छल । गुमसुम भेल ओ सदति शून्य दिस तकैत रहैत छल । ई खबरि कोना ने कोना करिया कक्का लग पहुँचल । ओ तुरत फेकू आ हरियाकेँ पदारथ ओतऽ पहुँचबाक खबरि पठा स्वयं पदारथक घर दिस विदा भऽ गेलाह।

पदारथ बहरघरामे चौकीपर पड़ल बड़ेरी दिस ताकि रहल छल । करिया कक्का बहरघरामे हहाइत-फुहाइत पैसलाह आ छत्ता-तौनी पटकैत शीर्षाशनमे आबि गेलाह । पदारथ आहट पाबि मुँह फेरलक तँ देखैत अछि जे करिया कक्का ओकरा सोझाँमे शीर्षाशन-अवस्थामे छथि । ओ जेना निन्दसँ जागि उठल आ ठाढ़ होइत करिया कक्कासँ चौंकैत पुछलक – 'कक्का, अहाँ एतऽ.... आ ई शीर्षाशन किएक कऽ रहल छी ।'

करिया कक्का ओही अवस्थामे रहैत बजलाह – 'दिमागमे कोरामिन पहुँचा रहल छी ।'

– 'बुझलहुँ नहि कक्का, अहाँ कखन अयलहुँ, किएक अयलहुँ, के बजौलक आ अबिते एहि अवस्थामे आबि गेलहुँ ।' पदारथ विस्मित होइत बाजल ।

करिया कक्का जावत पदारथक उत्तर दितथि तावत फेकू आ हरिया सेहो बहरघरामे प्रवेश कयलक । ओकरा दुनूकेँ देखैत

करिया कक्का सामान्य अवस्थामे अबैत बजलाह– 'हौ आब ने मोबाइल युग अयलैक अछि आ गामे–गामे मोबाइल टुनटुनाइत अछि । हमरा सभक दिमागक एनटेना तँ महादेवक बूटीसँ जुड़ल अछि तेँ कोनो खबरि समय रहिते भेटि जाइत अछि । नीतीशजीक पुलिस जकाँ आ मोदीजीक सी.बी.आई. जकाँ घटनाक बाद नहि, हम सभ पहिने चेति जाइत छी । तेँ ने अर्थाभावमे अयाची, धन–सम्पन्न भेलापर दरभंगा महाराज कहबैत छी । मूर्ख रहितो कालिदास कहबैत छी आ संकटमे फँसलापर गोनू बनि निकलि जाइत छी ।' करिया कक्काक ई नमहर भाषण नहि बुझि फेकू बाजल – 'कक्का एहिठाम हमरा किएक बजौलहुँ से कहिते ने छी आ किदन–कहाँदन बजने जा रहल छी ।'

– 'अच्छा तोंही बताबह, कैक टा कंपनी अछि अपना देशमे जकर 'गप्प' अपना गाममे बिकाइत अछि ।' करिया कक्का उनटे फेकूसँ प्रश्न कयलनि ।

फेकू जावत जबाव दिअय हरिया बाजि उठल – 'सोझ–सोझ बाजू कक्का, हमरा समय नहि अछि, हाटपर जयबाक अछि ।' कक्का आब खुलासा करैत बजलाह – 'जाहि गाममे दर्जनो मोबाइल कंपनी लाखो टाकाक गप्प बेचि सफल खेती करैत हो ताहि गामक बुझनुक लोक अकाल आ ऋणसँ डेरा जाय ई कोन पुरुषत्व भेल हौ ! गप्पक खेती मिथिलामे अदौसँ चलि रहल अछि आ आब जखन ओकर फसिल काटि कमयबाक बेर आयल अछि तँ पदारथ पेटकान देने अछि ।'
हरिया आ फेकू आब कने स्थिर भेल । हरिया कक्काकेँ टोनैत बाजल – 'जकरापर बितै छै से बुझैत छैक कक्का, अहाँ अनेरेक गप्प लधने छी ।'

करिया कक्का फेर शुरू भऽ गेलाह – 'मौसम देखि गिरगिट रंग बदलैत अछि; मतदाताक मूड–मिजाज देखि नेता–दल बयान बदलैत अछि; उपजा–बाड़ीक उठान–खसान देखि व्यापारी बाजारक रूखि बदलि दैत अछि आ हमरासभ मिथिलावासी जकर पोर–पोरमे संस्कार, सद्विचार आ बौद्धिकताक रसधार कोरामिन जकाँ बहैत छैक से किएक बेर अयलापर ओकरा अपन मस्तिष्क धरि पहुँचयबामे चुकि जाइत अछि से आश्चर्य लगैत अछि ।'

करिया कंक्का आगाँ जा किछु बजितथि ता पदारथ हुनक हाथ पकड़ि स्फुट स्वरमे मात्र एतवे बाजल–'कक्का अहाँ हमरा बचा लेलहुँ, हम अहाँक चिरऋणी रहब।' ओकर चेहरापरसँ अवसादक छाया पड़ा गेल रहै आ ओ समस्याक समाधानक दिशामे सक्रिय भऽ उठल छल ।'
हरिया आ फेकू कक्का दिस अपलक देखि रहल छल आ करिया कक्का छत्ता–तौनी उठबैत आ दुनूकेँ निहारैत हिन्दी गीत–
'इतनी जल्दी क्या है गोरी साजन के घर जाने की,
सखियों के संग बैठ जरा कुछ बाते हैं समझाने की'
गुनगुनाइत ओहिठामसँ विदा भऽ गेलाह ।

30.06.2016

●●●

शरदिन्दु चौधरी



जन्म : 7-10-1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार
माता : स्वर्गीय मोती देवी
पिता : पं॰ सुधांशु 'शेखर' चौधरी
शिक्षा : एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1, एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया
वृत्ति : पत्रकारिता
1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक
1984-86 मिथिला मिहिर, दैनिक
1987-89 मिथिला मिहिर, मासिक
1995-2002 आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक)
समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000सँ 2014।
सम्प्रति : सम्पादक, पूर्वोत्तर मैथिल, गुवाहाटी
शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)क व्यवस्थापक-संचालक।
प्रकाशित कृति : ❖ जँ हम जनितहुँ ❖ बड़ अजगुत देखल ❖ गोबरगणेश ❖ करिया कक्काक कोरामिन (व्यंग्य संग्रह)।
सम्पादन : मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ❖ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ❖ विद्यापति गीतिका (दू भाग) ❖ मैथिली गद्य गौरव ❖ अभिमत (हिन्दी)।
20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादन।
आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित।

सम्पर्क

2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी, इन्द्रपुरी, पटना-24

मो.- : 09334102305, 07759090913

E-mail : choudharyshardindu11@gmail.com